



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 40]

नई दिल्ली, शनिवार, अक्टूबर 5, 1974/आश्विन 13, 1896

No. 40]

NEW DELHI, SATURDAY, OCTOBER 5, 1974/ ASVINA 13, 1896

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

भाग II—खण्ड—4

PART II—Section 4

रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गये सांविधिक नियम और आदेश

Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence

रक्षा मंत्रालय

नई दिल्ली, 5 सितम्बर, 1974

क्र० नि० आ० 309—नौसेना अधिनियम, 1957 (1957 का 62) की धारा 184 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय की अभिसूचना सं० का० नि० आ० 74, तारीख 10 फरवरी, 1964 के साथ प्रकाशित, नौसेना (पेंशन) विनियम, 1964 में और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित विनियम बनाती है, अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ:— (1) इन विनियमों का नाम नौसेना (पेंशन) द्वितीय संशोधन विनियम, 1974 है।

(2) ये विनियम राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. विनियम 2 का संशोधन : नौसेना (पेंशन) विनियम, 1964 (जिन्हें इसमें इसके पश्चात् उक्त विनियमों में कहा गया है) में, विनियम 2 में, खण्ड (ज) के पश्चात् निम्नलिखित खण्ड अन्तर्भावित किया जाएगा अर्थात् :—

“(ज) ‘ग्रहक सक्रिय सेवा’, से ऐसी सभी सेवा अभिप्रेत है जो किसी साधारण या विशेष आदेश के अधिन पेंशन के लिए अर्हित करती हो।”

3. विनियम 16 का संशोधन :—उक्त विनियमों के विनियम 16 में, विनियम (1) में, अंत में निम्नलिखित स्थापित किया जायगा, अर्थात् :—

“किन्तु निःशक्तता पेंशन प्राप्त करने वाला कोई, आफिसर अपनी पेंशन का निःशक्तता अर्णवश नेता रहेगा।”

4. विनियम 17 का संशोधन :—उक्त विनियमों के विनियम 17 में:—

(1) हाशिया शीर्षक के स्थान पर, निम्नलिखित रखा जायगा अर्थात् :—

“ऐसे आफिसरों द्वारा नियोजन का प्रतिगृहीत किया जाना जिन्हें पेंशन, उपदान या अन्य फायदे अनुवर्त किए गए हों।”

(2) उप विनियम (2) के स्थान पर, निम्नलिखित उपविनियम रखा जाएगा, अर्थात् :—

“(2) कप्तान या ऊपर के रैंक का कोई आफिसर, चाहे वह अधिष्ठायी हैसियत में हो या अन्यथा, जिसे उसको नौसैनिक सेवा के संबंध में कोई कोई पेंशन, उपदान या अन्य फायदा अनुवर्त किया गया हो या जिसे इन विनियमों के अधीन पेंशन, उपदान या अन्य फायदे प्राप्त करने की संभावना हो, अपनी नौसैनिक सेवा के समाप्त होने की तारीख से दो वर्ष की अवधि समाप्त होने से पहले नियोजन प्रतिगृहीत करने के पूर्व निम्नलिखित दशाओं में ऐसी अनुज्ञा भी प्राप्त करेगा :—

(क) प्राइवेट उपक्रमों में वाणिज्यिक नियोजन,

(ख) केन्द्रीय या राज्य सरकार या संघ राज्यक्षेत्र सरकार के अधीन किसी सिविल पद पर या सरकार के अधीनस्वामित्वाधीन या नियंत्रणाधीन किसी नियमित निकाय के अधीन

किसी पद पर नियोजन, यदि अफसर को उसके अपने निवेदन पर समय पूर्व सेवानिवृत्त होने की अनुज्ञा दी गई हो। किन्तु ऐसी अनुज्ञा उस दशा में आवश्यक नहीं होगी जिसमें आफिसर अपने रैंक के लिए विहित मानक सेवा के पूरा होने पर प्रसामान्य अनुक्रम में नौसेना से सेवानिवृत्त हुआ था या जिसमें वह अस्वस्थता या शारीरिक निःशक्तता के आधार पर नौसैनिक सेवा से अशक्त ठहरा दिया गया था।”

5. नए विनियम 28क का :—अन्तःस्थापनःउक्त विनियमों के विनियम 28 के पश्चात्, निम्नलिखित विनियम अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“28क. ऐसी निःशक्तता का पुनर्निर्धारण जो अशक्तता के समय स्थायी रूप से पेंशन योग्य कोटि के नीचे हो ऐसे मामलों में जहाँ किसी आफिसर को अशक्तता के समय निःशक्तता या उसकी अपवृद्धि स्थायी रूप से पेंशन योग्य कोटि से नीचे हो, वहाँ वह उस तारीख से जिससे वह सेवानिवृत्त हुआ था, सात वर्ष की अवधि के भीतर चिकित्सा बोर्ड के समय लाए जाने की मांग कर सकेगा। यदि निःशक्तता फिर भी स्थायी रूप से पेंशन योग्य कोटि से नीचे निर्धारित की गई हो तो पुनर्निर्धारण की किसी मांग पर विचार नहीं किया जाएगा।”

6. विनियम 35 का प्रतिस्थापन :—उक्त विनियमों के विनियम 35 के स्थापन पर, निम्नलिखित विनियम रखा जाएगा, अर्थात् :—

“35. पुनः सर्वेक्षण चिकित्सा बोर्ड के समक्ष उपस्थित होने से इंकार करना :—यदि कोई ऐसा पेंशन भोगी, कि जिससे किसी विनियम या आदेश के अधीन उसकी निःशक्तता के पुनर्निर्धारण के लिए पुनः सर्वेक्षण चिकित्सा बोर्ड के समक्ष उपस्थित होने के लिए कहा गया हो, ऐसा करने से इंकार करता है तो, निःशक्तता प्रवर्धन या उसकी पेंशन ऐसे इंकार की तारीख से निलम्बित कर दी जाएगी। किन्तु यदि पेंशन भोगी ने पांच वर्षों से कम अर्हक सेवा की हो तो सम्पूर्ण निःशक्तता पेंशन निलम्बित कर दी जाएगी।”

7. विनियम 40 का प्रतिस्थापन :—उक्त विनियमों के विनियम 40 के स्थान पर, निम्नलिखित विनियम रखे जाएंगे, अर्थात् :—

40. जब शक्त बना देने वाली निःशक्तता सुधार के योग्य हो तब निःशक्तता पेंशन के अनुवृत्त किए जाने के लिए अवधि :—
(1) यदि निःशक्तता अशक्तता या पुनः सर्वेक्षण चिकित्सा बोर्ड के आधार पर, सुधार के योग्य प्रमाणित की गई हो तो निःशक्तता पेंशन प्रथमतः दस वर्ष की अवधि के लिए अनुवृत्त की जाएगी। इस अवधि के दौरान पेंशनभोगी को अपवृद्धि, यदि कोई हो, के आधार पर अपने पेंशन के पुनर्निर्धारण की मांग करने का अधिकार होगा। जहाँ पेंशन पुनर्निर्धारण के परिणामस्वरूप उपांतरित की गई हो वहाँ पेंशन पुनरीक्षित पंचाट की तारीख से 10 वर्ष की अवधि के लिए फिर से अनुवृत्त की जाएगी :

परन्तु यह तब जब कि निःशक्तता फिर भी सुधार के योग्य समझी गई हो। किसी उच्चतर या निम्नतर स्तर पर किया गया प्रत्येक उत्तरोत्तर निर्धारण दस वर्ष की अवधि के लिए होगा जिस अवधि के दौरान पेंशन-भोगी को और अपवृद्धि के आधार पर अपनी पेंशन पुनर्निर्धारित कराने का एक अवसर दिया जाएगा।

(2) यदि निःशक्तता की प्रतिशक्तता दस वर्ष तक अनुवृत्त रहे तो पेंशन-भोगी दस वर्ष की समाप्ति पर पुनः सर्वेक्षण चिकित्सा बोर्ड के समक्ष लाया जाएगा और यदि निःशक्तता पेंशन मंजूरी प्राधिकारी द्वारा फिर भी सुधार के योग्य समझी गई हो तो उसकी पेंशन जीवनपर्यन्त के लिए मंजूर की जाएगी। तत्पश्चात् पेंशन का कोई भी पुनरीक्षण अनुज्ञेय नहीं होगा।

(3) ऐसे मामलों में जहाँ अशक्त बना देने वाली निःशक्तता, हाथ पांव की हानि, दृष्टि की पूर्ण हानि, एक भांज की हानि, अंगोच्छेदन आदि हो, और जहाँ उसकी शारीरिक दशा सुधारने या बिगड़ने का प्रश्न नहीं उठता हो वहाँ पंचाट जीवनपर्यन्त के लिए मंजूर किया जाएगा।

40-क. जब अशक्त बना देने वाली निःशक्तता सुधार के योग्य हो तब निःशक्तता पेंशन के अनुवृत्त किए जाने के लिए अवधि :—
यदि निःशक्तता सुधार के योग्य मानी गई हो तो चिकित्सा बोर्ड की तारीख के प्रतिनिर्देश से संगणित किसी पंचाट की अवधि एक वर्ष से अधिक नहीं होगी। यदि निःशक्तता नौसैनिक सेवा द्वारा गुरुतर हुई मानी गई हो तो निःशक्तता अर्धवर्ष की कालावधि परिशिष्ट 5 में अन्तर्विष्ट उपबंधों को ध्यान में रखते हुए अवधारित की जाएगी।”

8. नए विनियम 44-क का अन्तःस्थापन :—उक्त विनियमों के विनियम 44 के पश्चात्, निम्नलिखित विनियम अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“44-क. अपनी अशक्तता प्रकट किए बिना पुनर्नियोजित किए गए निःशक्त पेंशन-भोगी की निःशक्तता पेंशन की अनुज्ञेयता :—किसी ऐसे पेंशन-भोगी की, जिसने, नौसेना में अपने पुनर्नियोजन पर, यह प्रकट न किया हो कि वह शारीरिक अयोग्यता के कारण सशस्त्र बलों में की सेवा से पक्षे निवृत्त किया गया था, उनके पुनर्नियोजन की तारीख से सशस्त्र बलों में की उनकी पूर्वतन सेवा के संबंध में उसकी अनुज्ञेय किसी निःशक्तता पेंशन से विवर्जित कर दिया जाएगा। यदि उसका पुनर्नियोजन उसकी शारीरिक अयोग्यता के कारण समाप्त कर दिया गया हो या यदि वह, पुनर्नियोजन की समाप्ति पर, चिकित्सा बोर्ड के समक्ष लाया गया हो तो पुनर्नियोजन की समाप्ति के पश्चात् निःशक्तता पेंशन के लिए उसका दावा केन्द्रीय सरकार के आदेशों के लिए भेजा जाएगा। ऐसे आदेशों में किसी पूर्वतन निःशक्तता की अपवृद्धि या किसी नई निःशक्तता के समावेशन में, नौसेना में उसके पुनर्नियोजन के प्रभाव का सम्यक रूप से ध्यान रखा जाएगा।”

9. विनियम 50 का संशोधन :—उक्त विनियमों के विनियम 50 में, खण्ड (ड) के पश्चात् निम्नलिखित स्पष्टीकरण अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“स्पष्टीकरण :—किसी ऐसे अफसर की विधवा माता को, जो अफसर के जीवनकाल में पुनर्विवाह करती है किन्तु वह उसकी मृत्यु के पूर्व फिर से विधवा हो जाती है, आश्रितों से संबंधित पेंशन का पंचाट, यदि अन्यथा अनुज्ञेय हो तो, अनुवृत्त किया जा सकेगा। आर्थिक परिस्थितियों के प्रयोजन के लिए, विधवा के द्वितीय पति से उसकी उपलब्ध संसाधनों, यदि कोई हो, पर भी विचार किया जाएगा।”

10. विनियम 51 का संशोधन : उक्त विनियमों के विनियम 51 में, स्पष्टीकरण 2 के पश्चात् निम्नलिखित स्पष्टीकरण जोड़ा जाएगा, अर्थात् :—

“स्पष्टीकरण 3: उपविनियम (2) के खण्ड (2) के उपखण्ड (1) के उपबंध सिविल या चार्टर्ड वायुयानों में की उड़ानों को भी लागू होंगे।

11. विनियम 53 का संशोधन : उक्त विनियमों के विनियम 53 में, उपविनियम (2) का लोप कर दिया जाएगा।

12. विनियम 55 का प्रतिस्थापन : उक्त विनियमों के विनियम 55 के स्थान पर निम्नलिखित विनियम रखा जाएगा, अर्थात् :—

“55. ‘धर्मज संतान’ पद की परिभाषा—कुटुम्ब पेंशन के प्रयोजन के लिए, ‘धर्मज संतान’ पद के अन्तर्गत “विधिवान्वित वस्तुतः ग्रहण की गई संतान” भी है।”

13. विनियम 58 और 59 का संशोधन : उक्त विनियमों के विनियम 58 और 59 में, उपविनियम (2) में, अंत में आने वाले परन्तुक का लोप कर दिया जाएगा।

14. विनियम 67 का संशोधन : उक्त विनियमों के विनियम 67 में,—(क) हाशिया शीर्षक में, “द्वितीय वैधव्य पर” शब्दों का लोप कर दिया जाएगा।

(ख) ‘उसके फिर से विधवा हो जाने पर शब्दों के पश्चात् निम्नलिखित शब्द अन्तःस्थापित किए जाएंगे, अर्थात् :—

“या ऐसे विवाह को, द्वितीय पति द्वारा विवाह—विच्छेद या अभिरक्षजन के जरिए जातिल कर दिये जाने पर,”

15. विनियम 77 का संशोधन : उक्त विनियमों के विनियम 77 में, उपविनियम (2) में, “स्पष्टीकरण” को स्पष्टीकरण 1 के रूप में पुनःसंख्यांकित किया जाएगा और इस प्रकार पुनःसंख्यांकित “स्पष्टीकरण 1” के पश्चात् निम्नलिखित “स्पष्टीकरण” अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“स्पष्टीकरण 2 : कोई ऐसा भूतपूर्व आरक्षित सैनिक, जो आरक्षित पेंशन के बदले में उपदान ले चुका था, उपविनियम (1) के प्रयोजन के लिये, वैसे ही माना जाएगा मानों वह कोई पेंशन-भोगी था। ऐसे किसी मामले में, किसी वर्धित पेंशन, यदि अन्यथा अनुज्ञेय हो, का अनुदान, उपदान और पेंशन (जिसके अन्तर्गत प्रचलित दरो, यदि कोई हो, पर अस्थायी वृद्धि और तबर्ध वृद्धि भी है) के बीच के अन्तर की घसूली के अधीन होगा, जिसे वह अपनी सेवानुवृत्ति की तारीख से अपने पुनर्नियोजन की तारीख तक लेगा। शोध्य बसूली उसकी पुनर्नियोजन या पुनः अभ्यावेशन की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के भीतर, उसके वेतन में से छत्तीस किस्तों में की जायगी। प्रथम किस्त पुनर्नियोजन या पुनः अभ्यावेशन की तारीख से तीन मास के भीतर देय होगी।”

16. विनियम 79 के संशोधन : उक्त विनियमों के विनियम 79 में, उप-विनियम (1) में खण्ड (V), (VI), (VII), (VIII), क्रमशः (VII), (VIII), (IX) और (X) के रूप में पुनःसंख्यांकित किए जाएंगे और इस प्रकार पुनः संख्यांकित खण्ड (VII) के पश्चात्, निम्नलिखित खण्ड अन्तःस्थापित किए जाएंगे, अर्थात् :—

“(V) छुट्टी बिना अनुपस्थिति की वह अवधि जो वेतन और भत्तों के बिना असाधारण छुट्टी के रूप में नियमित की गई हो।

“(VI) पदच्युति/सेवानुवृत्ति/नियुक्ति की तारीख और उसके रद्दकरण की तारीख के बीच की अवधि जो वेतन और भत्तों के बिना असाधारण छुट्टी के रूप में नियमित की गई हो।”

17. विनियम 86 का संशोधन : उक्त विनियमों के विनियम 86 में, मारणों के स्थान पर, निम्नलिखित मारणों रखी जाएगी, अर्थात् :—

“सेवा पेंशन की दरें—नौसैनिक”

सेवा पेंशन की दरें					
रैंक	सेवा के संपुरित वर्ष	ग्रुप 'क' में के नेवल विमानन नौसैनिकों के वेतन की दरें	ग्रुप 'ख' में के नेवल विमानन नौसैनिकों के वेतन की दरें	ग्रुप 'ग' में के नेवल विमानन नौसैनिकों के वेतन की दरें	ग्रुप 'क' में के नेवल विमानन नौसैनिकों के वेतन की दरें
1	2	3	4	5	6
		प्रतिमास रु०	प्रतिमास रु०	प्रतिमास रु०	प्रतिमास रु०
1. नाविक वर्ग 1 या समतुल्य	15		53	43	56
	16		57	46	60
	17		61	49	63
	18		64	52	67
	19		68	55	71
	20		71	58	74
	21		75	61	78
2. मुख्य नाविक या समतुल्य	15		57	56	68
	16		61	60	73
	17		65	64	78
	18		69	68	82
	19		72	71	87
	20		76	75	91
	21		80	79	96
	22		84	83	100
	23		88	86	105
	24		91	90	109
	25		95	94	114

1	2	3	4	5	6	1	2	3	4	5	6
	प्रतिमास रु०	प्रतिमास रु०	प्रतिमास रु०	प्रतिमास रु०	प्रतिमास रु०		प्रतिमास रु०	प्रतिमास रु०	प्रतिमास रु०	प्रतिमास रु०	प्रतिमास रु०
3. पैटी आफिसर परि- शिलपी वर्ग 4 मैकेनि- शियन वर्ग 4	15	74	72	72	80	6. परिशिलपी, वर्ग 1 मेकेनिशियन, वर्ग 1	15	102			
	16	79	76	76	86		16	109			
	17	84	81	81	91		17	116			
	18	89	86	86	96		18	123			
	19	94	91	91	102		19	130			
	20	99	95	95	107		20	136			
	21	104	100	100	112		21	143			
	22		105	105	118		22	150			
	23		110	110	123		23	157			
	24		114	114	128		24	164			
	25		119	119	134		25	170			
4. मुख्य पैटी आफिसर परिशिलपी वर्ग 3, मैकेनिशियन, वर्ग 3	15	83	83	83	99	7. मुख्य परिशिलपी मुख्य मैकेनिशियन	15	116			
	16	88	88	88	105		16	124			
	17	94	94	94	112		17	131			
	18	99	99	99	118		18	139			
	19	105	105	105	125		19	147			
	20	110	110	110	131		20	154			
	21	116	116	116	138		21	162			
	22		121	121	145		22	170			
	23		127	127	151		23	178			
	24		132	132	158		24	185			
	25		138	138	164		25	193			
5. परिशिलपी, वर्ग 2 मेकेनिशियन, वर्ग 2	15	96				8. मास्टर मुख्य पैटी आफिसर वर्ग 2	15	120	95	113	
	16	103					16	128	102	121	
	17	109					17	136	108	129	
	18	115					18	144	114	136	
	19	122					19	152	121	144	
	20	128					20	159	127	151	
	21	135					21	167	133	159	
	22	141					22	175	140	166	
	23	147					23	183	146	174	
	24	154					24	191	152	181	
	25	160					25	199	159	189	
							26	207	165	196	
							27	215	171	204	
							28	223	178	211	
							29	231	184	219	
							30	239	190	226	

1	2	3	4	5	6
9. मास्टर मुख्य पेंटी					
आफिसर वर्ग 1	15	131	107	125	
	16	140	114	133	
	17	148	121	141	
	18	157	128	150	
	19	166	135	158	
	20	174	142	166	
	21	183	149	174	
	22	192	156	183	
	23	201	163	191	
	24	209	170	199	
	25	218	178	208	
	26	227	185	216	
	27	235	192	224	
	28	244	199	232	
	29	253	206	241	
	30	261	213	249	

18. नए विनियम 94-क का अन्तःस्थापन : उक्त विनियमों के विनियम 94 के पश्चात् निम्नलिखित विनियम अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“94-क अनर्हक सेवा में विहित नियुक्ति के पूरे हो जाने पर सेवान्मुक्त किये गये व्यक्तियों को अर्थाधिक उपदान : किसी ऐसे आरक्षित सैनिक को, जो अपनी विहित नियुक्ति के पूरा हो जाने पर सेवान्मुक्त कर दिया गया हो किन्तु ओ अपनी ऐसी सेवा के कारण जिसमें कि कोई ऐसी अनर्हक अवधि सम्मिलित है जिसकी वजह से उसकी अर्हक सेवा की अवधि घट कर पन्द्रह वर्ष से कम हो जाती हो, किन्तु वह किसी आरक्षित सैनिक पेंशन के लिए अर्हित होने में असफल रहता है, उस दर पर अर्थाधिक उपदान अनुदत्त किया जा सकेगा जो सक्रिय सेवा के प्रत्येक सम्पूर्ण वर्ष के लिये किसी नौसैनिक को अनुश्रेय हो : परन्तु यह तब जब कि उसने पाँच वर्ष से अन्यून अर्हक सक्रिय सेवा की हो।”

19. नए विनियम 101-क और 101-ख का अन्तःस्थापन : उक्त विनियमों के विनियम 101 के पश्चात्, निम्नलिखित विनियम अन्तःस्थापित किये जायेंगे, अर्थात् :—

“101-क, ऐसे व्यक्ति जो उनके स्थायी रूप से निम्न चिकित्सीय प्रवर्ग में होने के कारण सेवान्मुक्त किये गये हों : ऐसे व्यक्तियों के बारे में, जो स्थायी रूप से किसी निम्नतर चिकित्सीय प्रवर्ग (ई से भिन्न) में रख गये हों और जो इन कारण सेवान्मुक्त किये गये हों कि उन्हें उनके निम्न चिकित्सीय प्रवर्ग के उपयुक्त कोई आनुकालिक नियोजन प्रदान नहीं किया जा सकता, यह समझा जायगा कि वे इन विनियमों के परिशिष्ट 5 में अधिकथित नियमों के प्रयोजनों के लिये सेवा से अशक्त ठहरा किये गये हैं।

स्पष्टीकरण :—उपरोक्त उपबन्ध ऐसे व्यक्तियों को भी लागू होगा, जो विस्तारित सेवा के समय और उनके विस्तारण की अवधि के पूरा होने से पूर्व उस कारण से सेवान्मुक्त किये जाने पर किसी निम्न चिकित्सीय प्रवर्ग में रखे गये हों।

101-ख, किसी निम्न चिकित्सीय प्रवर्ग में रख जाने के कारण सेवान्मुक्त किये गये आरक्षित सैनिक : (1) किसी ऐसे आरक्षित

सैनिक के बारे में, जो स्थायी रूप से किसी निम्नतर चिकित्सीय प्रवर्ग (ई से भिन्न) में रखा गया हो और जो उस कारण से प्लोट रिजर्व से सेवान्मुक्त किया गया हो, यह समझा जायगा कि वह इन विनियमों के परिशिष्ट 5 में अधिकथित नियमों के प्रयोजन के लिये सेवा से अशक्त ठहरा दिया गया है।

(2) किसी ऐसे व्यक्ति को, जो निःशक्तता पेंशन के अनुदत्त किये जाने के लिये अपात्र पाया गया हो, विनियम 89 के अधीन यथा अनुश्रेय सेवा उपदान सवत्त किया जायगा।”

20. नए विनियम 105-क का अन्तःस्थापन :—उक्त विनियमों के विनियम 105 के पश्चात्, निम्नलिखित विनियम अन्तःस्थापित किये जायेंगे, अर्थात् :—

“105-क ऐसी निःशक्तता का पुनर्निर्धारण जो अशक्तता के समय स्थायी रूप से बीम प्रतिशन से कम हो : ऐसे मामलों में जहाँ अशक्तता के समय किसी व्यक्ति को निःशक्तता या उसकी अपवृद्धि स्थायी रूप से पेंशन योग्य कोटि से कम हो, वहाँ वह अपनी सेवान्मुक्त की तारीख से सात वर्ष की अवधि के भीतर किसी चिकित्सीय बोर्ड के समक्ष लाये जाने की मांग कर सकेगा। यदि निःशक्तता फिर भी स्थायी रूप से पेंशन निर्धारित कोटि से नीचे निर्धारित की गई हो तो पुनर्निर्धारण के लिये किसी मांग पर विचार नहीं किया जायगा।

105-ख सेवान्मुक्त के समय निःशक्तता (1) किसी ऐसे नौसैनिक को, जो अपनी नियुक्ति की अवधि पूरा कर लेने के पश्चात् सेवा से निर्मुक्त किया गया हो और जो सेवान्मुक्त के समय, नौसैनिक सेवा से अभिसंबंधीय या उसके द्वारा गुरुतर बनाई गई निःशक्तता सेवा से पीड़ित पाया गया हो, मध्य प्राधिकारी के विवेकानुसार, अनुश्रेय सेवा पेंशन के अतिरिक्त कोई निःशक्तता अण्वेश वैसे ही अनुदत्त किया जा सकेगा मानो वह उस निःशक्तता के कारण सेवान्मुक्त किया गया हो।

(2) पेंशन का निःशक्तता अण्वेश, सेवा निवृत्ति या सेवान्मुक्ति के समय स्वीकृत निःशक्तता कोटि पर उस तारीख को जिसको घाव या क्षति हुई थी अथवा किसी रोग की वशा में, उस रोग के कारण कर्तव्य से प्रथम बार हटाये जाने की तारीख को धारित रैंक के आधार पर निर्धारित किया जायगा।

(3) उपविनियम (1) और (2) के उपबन्ध उन नौसैनिकों को भी लागू होंगे जो अपनी नियुक्ति की अवधि के पूरा हो जाने पर सेवा से उन्मुक्त किये गये हों और जिन्होंने केवल एक बार सेवा उपदान उपाजित किया हो।”

21. विनियम 106 का प्रतिस्थापन : उक्त विनियमों के विनियम 106 के स्थान पर, निम्नलिखित विनियम रखा जायगा, अर्थात् :—

“106—निःशक्तता पेंशन के निर्धारण के लिये रैंक :—सेवा के, और निःशक्तता पेंशन के निःशक्तता अण्वेश के निर्धारण के प्रयोजन के लिये रैंक, निम्नलिखित तारीखों में से किसी तारीख को, इन में से जो भी अधिक अनुकूल हो, किसी व्यक्ति द्वारा धारित अधिष्ठायी रैंक या उच्चतर वेतन वाला कर्मचारी रैंक, यदि कोई हो, होगा :—

(क) सेवा से अशक्त ठहराए जाने की तारीख, या

(ख) वह तारीख जिसको उसके घाव या क्षति हुई थी या वह उसको निःशक्तता कारित करने वाले किसी रोग के कारण कर्तव्य से प्रथम बार हटाया गया था, या

(ग) यदि उसने और सेवा की हो तथा ऐसी सेवा के दौरान और उसके परिणामस्वरूप उसकी निःशक्तता की अपवृद्धि हुई थी तो वह तारीख जिसको वह निःशक्तता के कारण कर्तव्य से बाध में हटाया गया था।

स्पष्टीकरण:—किसी ऐसे व्यक्ति की दशा में जो अश्वत्थार या अदक्षता के कारण उस तारीख के पश्चात् जिसको याव या क्षति हुई थी या अश्वत्थार निःशक्तता हुई थी, किसी निम्नतर रैंक पर प्रतिवर्तित कर दिया गया हो, सेवा के, और निःशक्तता पेंशन के निःशक्तता अण्वंश के निर्धारण के लिये रैंक, सेवा से अशक्त ठहराया जाने की तारीख को धारित रैंक होगी।

22. विनियम 107 का संशोधन:—उक्त विनियमों के विनियम 107 में, सारणी के खण्ड (ख) के सामने, मद (1) के स्थान पर, निम्नलिखित मद रखी जायगी, अर्थात्:—

“(1) यदि निःशक्तता किसी वायुयान में उड़ान या पैराशूट से कर्तव्य के दौरान कृत्य के समय अथवा उचित प्राधिकार के अधीन किसी वायुयान में कर्तव्य का पालन करने समय हुई थी तो उसके रैंक और ग्रुप के अनुकूल न्यूनतम सेवा पेंशन।”

23. विनियम 109 का प्रतिस्थापन:—उक्त विनियमों के विनियम 109 के स्थान पर, निम्नलिखित विनियम रखा जायगा, अर्थात्:—

“109 जब अशक्त बना देने वाली निःशक्तता सुधार के आयोग्य हो तब निःशक्तता पेंशन के अनुदत्त किये जाने की अवधि:—(1) यदि निःशक्तता, नौसैनिक सेवा से अभिसंबंधनीय या उसके द्वारा गुरुतर हुई मानी गई हो और वह अशक्तता या पुनः सर्वेक्षण चिकित्सा बोर्ड के आधार पर, सुधार के आयोग्य प्रभावित की गई हो तो निःशक्तता पेंशन प्रथमतः दस वर्ष की अवधि के लिये अनुदत्त की जा सकेगी। इस अवधि के दौरान पेंशनभोगी का अपवृद्धि, यदि कोई हो, तो आधार पर अपनी पेंशन के पुनर्निर्धारण की माग करने का अधिकार होगा। जहाँ पेंशन पुनर्निर्धारण के परिणाम-स्वरूप उपान्तरित की गई हो वहाँ पेंशन पुनरीक्षित पंचाट की तारीख से दस वर्ष की अवधि के लिये फिर से अनुदत्त की जा सकेगी; परन्तु यह तब जब कि निःशक्तता फिर भी सुधार के आयोग्य समझी गई हो। किसी उच्चतर या निम्नतर दर पर किया गया प्रत्येक उत्तरोत्तर निर्धारण दस वर्ष की अवधि के लिये होगा जिस अवधि के दौरान पेंशनभोगी का और अपवृद्धि के आधार पर अपनी पेंशन पुनर्निर्धारित कराने का एक अवसर दिया जायगा।

(2) यदि निःशक्तता की प्रतिशतता दस वर्ष तक अनुपातरित रहे तो पेंशन भोगी 10 वर्ष की समाप्ति पर पुनः सर्वेक्षण चिकित्सा बोर्ड के समक्ष लाया जायगा और यदि निःशक्तता, पेंशन मजूरी प्राधिकारी द्वारा फिर भी सुधार के आयोग्य समझी गई हो तो उसकी पेंशन जीवनपर्यन्त के लिये मजूर की जायगी। तत्पश्चात् पेंशन का कोई भी पुनरीक्षण अनुज्ञेय नहीं होगा।

(3) ऐसे मामलों में जहाँ अशक्त बना देने वाली निःशक्तता हाथ-पांव की हानि, दृष्टि की पूर्ण हानि, एक आंख की हानि, अंगच्छेदन आदि हो, और जहाँ उसकी शारीरिक दशा के सुधारने/बिगड़ने का प्रश्न नहीं उठता हो, वहाँ पंचाट जीवनपर्यन्त के लिये मजूर किया जायेगा।

24. नए विनियम 109-क का अन्तःस्थापन:—उक्त विनियमों के विनियम 109 के पश्चात् निम्नलिखित विनियम अन्तःस्थापित किया जायगा, अर्थात्:—

“109-क जब निःशक्तता सुधार के लिये योग्य हो तब निःशक्तता पेंशन के अनुदत्त किये जाने के लिये अवधि (1) यदि निःशक्तता नौसैनिक सेवा से अभिसंबंधनीय मानी गई हो किन्तु सुधार के योग्य समझी गई हो तो कोई पंचाट प्रसामान्यतः उस तारीख से जिस तारीख से निःशक्तता पेंशन अनुज्ञेय है या ऐसे मामले में जहाँ निःशक्तता पेंशन किसी विनिर्दिष्ट अवधि के लिये दिया था वहाँ पूर्वतन पंचाट के अन्तर्गत की तारीख से, तीन वर्ष की अवधि के लिये किया जायेगा।

परन्तु ऐसे मामलों में जहाँ निःशक्तता का स्वीकृत कोटि पर निःशक्तता की कालावधि तीन वर्ष से कम मानी गई हो, वहाँ अन्तिम चिकित्सा बोर्ड की तारीख के प्रतिनिर्देश से संगणित किसी पंचाट की अवधि उस कोटि पर निःशक्तता की कालावधि की अवधि से अधिक नहीं होगी।

(2) किन्तु कोई पंचाट किसी एकल मामले में ऐसी लम्बी या छोटी अवधि के लिये किया जा सकेगा जो केन्द्रीय सरकार द्वारा साधारणतः या किसी विशिष्ट निःशक्तता के संबंध में विहित की जाए।

(2) यदि निःशक्तता नौसैनिक सेवा के कारण गुरुतर हुई मानी गई हो तो किसी पंचाट की अवधि इन नियमों के परिशिष्ट 5 में अधिकृत नियमों के सुसंगत उपबन्धों का सम्यक ध्यान रखते हुए अवधारित की जायगी।”

25. विनियम 112 का प्रतिस्थापन:—उक्त विनियमों के विनियम 112 के स्थान पर, निम्नलिखित विनियम रखा जायगा, अर्थात्:—

“112—पुनः सर्वेक्षण चिकित्सा बोर्ड के समक्ष उपस्थित होने से इंकार करना किसी ऐसे व्यक्ति की निःशक्तता पेंशन, जिससे उसकी निःशक्तता के पुनर्निर्धारण के लिये पुनः सर्वेक्षण चिकित्सा बोर्ड के समक्ष उपस्थित होने के लिये किसी नियम या आदेश के अधीन अपेक्षा की गई हो किन्तु उसने चिकित्सा बोर्ड के समक्ष उपस्थित होने से इंकार कर दिया हो, ऐसे इंकार करने की तारीख से निलम्बित कर दी जायगी। किन्तु यदि उसने दस वर्ष या अधिक, अर्हक सेवा की हो तो विनियम 96 के साथ पठित विनियम 98 के अधीन अनुज्ञेय विशेष पेंशन उस तारीख से अनुदत्त की जायगी यह पंचाट उस निःशक्तता पेंशन में से पुनः समायोजित किया जायगा जो इसके पश्चात् अनुदत्त की जाय।”

26. नए विनियम 113-क का अन्तःस्थापन:—उक्त विनियमों के विनियम 113 के पश्चात् निम्नलिखित उपविनियम अन्तःस्थापित किया जायगा, अर्थात्:—

“113-क अपनी अशक्तता प्रकट किये बिना पुनर्नियोजित/पुनः/अभ्यावेशित किये गये निःशक्त पेंशनभोगी को निःशक्तता पेंशन की अनु-ज्ञेयता:—किसी ऐसे पेंशन भोगी को जिसने, नौसेना में अपने पुनर्नियोजन या पुनः अभ्यावेशन पर, यह प्रकट न किया हो कि वह शारीरिक अयोग्यता के कारण मशस्त्र बलों में की सेवा से पहले नियुक्त या उन्मुक्त किया गया था, उसके पुनर्नियोजन या पुनः अभ्यावेशन की तारीख से, मशस्त्र बलों में की उसकी पूर्वतन सेवा के संबंध में उसको अनुज्ञेय किता निःशक्तता पेंशन से, विवर्जित कर दिया जायगा। यदि उसकी पुनर्नियोजन या पुनः अभ्यावेशन उसकी शारीरिक अयोग्यता के कारण समाप्त कर दिया गया हो या यदि वह, पुनर्नियोजन पुनः अभ्यावेशन की समाप्ति पर, चिकित्सा बोर्ड के समक्ष लाया गया हो तो पुनर्नियोजन या पुनः अभ्यावेशन की समाप्ति के पश्चात् निःशक्तता पेंशन के लिये

उसकी दावा केन्द्रीय सरकार के आदेशों के लिये भेजा जायेगा।
एसे आदेशों में किसी पूर्वतन निःशक्तता की अपवृद्धि या किसी नई निःशक्तता के समावेशन से नौमैतिक सेवा में उसके पुनर्नियोजन या पुनः अभ्यावेशन के प्रभाव का सम्पूर्ण रूप से ध्यान रखा जाएगा।”

27. विनियम 120 का संशोधन—उक्त विनियमों के नियम 120 में—

(1) क्रम सं० 4 पर, “धर्मेश पुत्र” शब्दों के पश्चात् निम्नलिखित शब्द और कोष्ठक अन्तः स्थापित किये जायेंगे, अर्थात्
“(जिसके अन्तर्गत विधिमाम्यतः दन्तक लिया गया पुत्र भी है)”

(2) क्रम सं० 5 में, “धर्मेश पुत्री” शब्दों के पश्चात् निम्नलिखित शब्द और कोष्ठक अन्तः स्थापित किये जायेंगे, अर्थात्—

“(जिसके अन्तर्गत विधिमाम्यतः दन्तक ली गई पुत्री भी है)”

(3) विद्यमान “स्पष्टीकरण” स्पष्टीकरण के रूप में पुनः संख्यांकित किया जायेगा और इस प्रकार पुनः संख्यांकित “स्पष्टीकरण” के पश्चात् निम्नलिखित स्पष्टीकरण अन्तः स्थापित किये जायेंगे, अर्थात् स्पष्टीकरण 2— इस उपखण्ड में उपरोक्त या किसी अन्य विनियम में प्रयुक्त विधवा शब्द, से, विशेष कुटुम्ब पेंशन संबंधी पंचाटों की बाबत यह समझा जायेगा कि उसके अन्तर्गत कोई ऐसी विधवा भी है जिसका विवाह उस व्यक्ति की सेवोन्मुखित या अशक्तता के पश्चात् हुआ था।

“स्पष्टीकरण 3— इस उपखण्ड में उपरोक्त या किसी अन्य विनियम में प्रयुक्त संतान शब्द, से, विशेष कुटुम्ब पेंशन संबंधी पंचाटों की बाबत यह समझा जायेगा कि उसके अन्तर्गत कोई ऐसी संतान भी है जो उस व्यक्ति की सेवोन्मुखित या अशक्तता के पश्चात् उग विवाह से उत्पन्न हुई हो।”

28. विनियम 121 का संशोधन—उक्त विनियमों के विनियम 121 में, “या दत्तक या सोतेली संतान” शब्दों के स्थान पर “या सोतेली संतान” शब्द रखे जायेंगे।

28. विनियम 124 का संशोधन—उक्त विनियमों के विनियम 124 में—

(1) खण्ड (क) में,

(1) उपखण्ड (IV) के स्थान पर, निम्नलिखित उपखण्ड रखा जायेगा अर्थात्—

“(IV) यदि कोई पिता उपखण्ड (1) में निर्दिष्ट तारीख को 50 वर्ष से कम आयु का हो, तो वह प्रथम जीवनपर्यन्त पंचाट के रूप में पेंशन के मूल अनुदान के लिए पात्र समझा जायेगा, परन्तु यह तब तक कि मृत नौमैतिक की विधवा या माता भी जीवित हो। उसकी मृत्यु या निरहंता पर, पेंशन, यथास्थिति क्रमशः विनियम 130 और 131 के के अधीन विधवा को अन्तर्गत कर दी जायेगी या माता को मिलती रहेगी। यदि 50 वर्ष से कम आयु का कोई पिता एक मातृ उत्तरजीवी हो तो वह तब तक कुटुम्ब पेंशन के अनुदान के लिए अपात्र बना रहेगा जब तक कि वह 50 वर्ष की आयु प्राप्त नहीं कर लेता।”

(II) अन्त में निम्नलिखित स्पष्टीकरण अन्तः स्थापित किया जायेगा, अर्थात्—

“स्पष्टीकरण—वह तारीख जिसको पेंशन संज्ञरी प्राप्ति-कारी यह निश्चय करता है कि कुटुम्ब पेंशन के लिए दावा अनुज्ञेय है, उसी तारीख होगी जिसको प्राप्त पेंशन संवाय आदेश रखा लेखा नियंत्रक (पेंशन) द्वारा अनुमोदित किया गया हो और वास्तविक अनुदान के लिए कार्यवाही और उसकी अधि-सूचना आरम्भ हुई हो।”

(2) खण्ड (ख), खण्ड (ख) (1) के रूप में पुनः आश्रित किया जायेगा और इस प्रकार पुनः आश्रित खण्ड (ख) (1) के पश्चात्, निम्नलिखित उपखण्ड अन्तः स्थापित किया जायेगा अर्थात्—

“(II) यदि कोई पिता कुटुम्ब पेंशन पाने के लिए सबसे पहला पात्र वारिस हो और खण्ड (क) (1) में निर्दिष्ट तारीख को 50 वर्ष से कम आयु का हो, तो वह प्रथम जीवनपर्यन्त पंचाट के रूप में पेंशन के मूल अनुदान के लिए पात्र समझा जायेगा, परन्तु यह तब तक कि मृत नौमैतिक की माता भी जीवित हो। उसकी मृत्यु या निरहंता पर, पेंशन विनियम 131 के अधीन माता को मिलनी रहेगी। यदि 50 वर्ष से कम आयु का कोई पिता एक मातृ उत्तर-जीवी हो तो वह तब तक कुटुम्ब पेंशन के अनुदान के लिए अपात्र बना रहेगा जब तक कि वह पचास वर्ष की आयु प्राप्त नहीं कर लेता।”

30. विनियम 125 का प्रतिस्थापन—उक्त विनियमों के विनियम 125 के स्थान पर, निम्नलिखित विनियम रखा जायेगा, अर्थात्—
“125—वह तारीख जिससे विशेष कुटुम्ब पेंशन का अनुदान प्रभावी होगा

(I) विशेष कुटुम्ब पेंशन का मूल अनुदान विनियम 124 (क) (1) में निर्दिष्ट तारीख को सबसे पहले वाले जीवित वारिस को अपघटना की उस तारीख के जिसकी वजह से दावा मूठ हुआ हो बाब वाली तारीख से प्रथम जीवन पर्यन्त पंचाट के रूप में दिया जायेगा। पहले ही संदन्त लम्बित जाव पंचाट, यदि कोई हो, नौमेना (पेंशन) विनियम, 1964 के विनियम 177 के अनुसार समायोजित किया जायेगा।

(2) यदि उपनियम (I) में निर्दिष्ट तारीख को सभी पात्र सदस्यों की मृत्यु हो गई हो या वे निरहित हो गए हों तो बकाया केवल केन्द्रीय सरकार के विवेकानुसार संदन्त किये जा सकेंगे।

(3) निरहंता होने के पश्चात् किये गये दावे किसी भी वशा में ग्रहण नहीं किये जायेंगे।

31. विनियम 126 का संशोधन—उक्त विनियमों के विनियम 126 में खण्ड (ग) और (घ) क्रमशः खण्ड (घ) और (ङ) के रूप में पुनः आश्रित किये जायेंगे, और इस प्रकार पुनः आश्रित खण्ड (घ) के, निम्नलिखित खण्ड अन्तः स्थापित किया जायेगा, अर्थात्—

“(ग) इन विनियमों के अधीन कुटुम्ब पेंशन का केन्द्रीय या राज्य (असाधारण) पेंशन नियमों के अधीन किसी पेंशन के अनुदान द्वारा उपभोग नहीं किया जायेगा या वह बंद नहीं की जायेगी। किन्तु इन विनियमों के अधीन कोई विशेष कुटुम्ब पेंशन और सिविल नियमों के अधीन उसी व्यक्ति की बाबत कोई असाधारण पेंशन अनुज्ञेय नहीं होगी।”

32. विनियम 127 का प्रतिस्थापन—उक्त विनियमों के विनियम 127 के स्थान पर, निम्नलिखित विनियम रखा जायेगा, अर्थात्—

“127—वह रैंक और युव जिनके आधार पर विशेष कुटुम्ब पेंशन और उपदान निर्धारित किये गये हों—विशेष कुटुम्ब पेंशन और उपदान निम्नलिखित तारीखों में से किसी तारीख को, इनमें से जो भी अधिक अनुकूल हो किसी व्यक्ति द्वारा धारित अधिष्ठायी रैंक या उच्चतर वेतन वाले कार्यकारी रैंक, यदि कोई हो और घुर के आधार पर निर्धारित किया जायेगा”

(क) यदि मृत्यु सेवा के दौरान हुई हो तो मृत्यु की तारीख तथा यदि मृत्यु सेवोन्मुक्ति या अशक्त ठहराये जाने के पश्चात् हुई हो तो सेवोन्मुक्ति या अशक्त ठहराये जाने की तारीख, या

(ख) वह तारीख जिसको किसी व्यक्ति के घाव या क्षति हुई थी या वह उसकी मृत्यु कारित करने वाले रोग के कारण, कर्तव्य से प्रथम बार हटाया गया हो, या

(ग) यदि उसने और सेवा की हो तथा ऐसी सेवा के दौरान और उसके परिणामस्वरूप उसकी निष्कृति की अपवृद्धि हुई थी, तो वह तारीख जिसकी वह निष्कृति के कारण कर्तव्य से बाध में हटाया गया था।

“स्पष्टीकरण—किसी ऐसे व्यक्ति की वशा में जो अवचार या अवधान के कारण उस तारीख के पश्चात् जिस तारीख को मृत्यु के कारण की शुरुआत हुई थी किसी निम्नतर रैंक पर प्रतिवर्तित कर दिया गया हो विशेष कुटुम्ब पेंशन और उपदान के निर्धारण के लिए रैंक वह रैंक होगा जो खण्ड (क) में वर्णित तारीख को धारित था।”

33. विनियम 129 का संशोधन—उक्त विनियमों के विनियम 129 में, खण्ड (क) के स्थान पर, निम्नलिखित खण्ड रखा जायेगा, अर्थात्—

(क) यदि किसी विशेष कुटुम्ब पेंशन का प्राप्तकर्ता, कुटुम्ब के अन्य ऐसे पात्र वारिसों के जो मृत नौसैनिक पर आश्रित थे पालन पोषण के लिए आनुवांशिक अभिवाय करने से इंकार करता हो या यदि पेंशन किसी संतान के नाम में हो किन्तु वह साधारणतया कुटुम्ब के द्वितीयों में नहीं लगाई जाती हो तो सक्षम प्राधिकारी विशेष कुटुम्ब पेंशन की भर्ती संगठन द्वारा तैयार की गई और निम्नलिखित स्थानीय सिविल प्राधिकारियों में से किसी के द्वारा अनुप्रभावित या प्रतिहस्ताक्षरित की गई स्थापन/अन्वेषण रिपोर्ट के आधार पर, मृत नौसैनिक के पात्र वारिस (वारिसों) में लेखबद्ध कारणों से अपने विवेकानुसार वितरित कर सकेगा :—

(i) गांव का सरपंच

(ii) सिविल या सेना का सेवारत या सेवा निवृत्त राजपक्षित आफिसर, जिनके अन्तर्गत कनिष्ठ आयुक्त आफिसर भी भी (जूनियर कमीशनड आफिसर) भी है।

(iii) उप पोस्टमास्टर

(iv) कानूनगो या पटवारी

(v) पुलिस उप निरीक्षक

(vi) किसी नगर निगम या नगर पालिका समिति या जिला परिषद्/जिला बोर्ड का सदस्य

(vii) पंचायत प्रधान/मुखिया (गांव का मुखिया)।पटेल त्रिनेज आफिसर/पंचायत कार्यपालिका आफिसर

(viii) संगद् सचिव/विधान सभा सदस्य/विधान परिषद् सदस्य

(ix) शपथ आयुक्त/नोटरी पब्लिक

“स्पष्टीकरण यदि किसी वारि के अन्वेषण के आरम्भ में यह पाया गया हो कि नामित वारिस अन्य पात्र वारिसों के साथ सामुदायिक जीवन व्यतीत नहीं कर रहा है या वह उनके पालन-पोषण के लिए आनुवांशिक अभिवाय करने के लिए सक्षम नहीं है तो सक्षम प्राधिकारी आरम्भिक अनुदान के समय कुटुम्ब पेंशन के वैसे ही विभाजन के लिए आदेश कर सकेगा”

384. विनियम 132 का संशोधन—उक्त विनियमों के विनियम 132 में, खण्ड (क) उपविनियम (1) के रूप में पुनः संख्यांकित किया जायेगा और इस प्रकार पुनः संख्यांकित उपविनियम (1) के पश्चात् निम्नलिखित उपविनियम अन्तःस्थापित किया जायेगा।

“(12) किसी विधवा की विशेष कुटुम्ब पेंशन जो उसके मृत पति के सगे भाई से भिन्न किसी व्यक्ति के साथ उसके पुनर्विवाह करने पर बंद कर दी गई थी, उसको उस वशा में प्रत्यावर्तित की जा सकेगी जब उसका पुनर्विवाह, विवाह-विच्छेद या अभिरक्षक द्वितीय पति की मृत्यु के कारण वातिल कर दिया गया हो, परन्तु यह तब जब कि वह किसी निराश्रित दशा में छोड़ दी गई हो और वह कोई द्वितीय जीवनपर्यन्त पंचाट प्राप्त नहीं कर रही थी। ऐसे मामले व्यक्तिगत गुणागुण के आधार पर विचार के लिए केन्द्रीय सरकार को भेजे जाएंगे।”

35. विनियम 133 का संशोधन—उक्त विनियमों के विनियम 133 में, खण्ड (क) में, स्पष्टीकरण “स्पष्टीकरण 1” के रूप में पुनः संख्यांकित किया जाएगा और इस प्रकार पुनः संख्यांकित स्पष्टीकरण के पश्चात् निम्नलिखित स्पष्टीकरण अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात्—

‘स्पष्टीकरण 2—खण्ड (क) (ii) के उपबंध किसी सिविल या चार्टर्ड वायुयान में की उड़ानों के लिए भी तब तक लागू रहेगा जब तक कि वैसे ही आदेश केन्द्रीय सिविल सरकार सेवकों को बाधन विद्यमान रहते हैं’

36. विनियम 134 का संशोधन—उक्त विनियमों के विनियम 134 में (i) प्रारंभ में आने वाले “(1) कोष्ठक और अंक का लोप” कर दिया जाएगा (ii) नैसर्गिक संतान “शब्दों के पश्चात्” “(जिसके अन्तर्गत विधिमाम्यकः दत्तक ली गई संतान भी है)” कोष्ठक और शब्द अन्तःस्थापित किए जाएंगे।

(iii) उपविनियम (2) का लोप कर दिया जाएगा।

(iv) अन्त में स्पष्टीकरण के रूप में निम्नलिखित अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात्—

“स्पष्टीकरण—इस उपखंड में उपरोक्त या किसी अन्य विनियम में प्रयुक्त “संतान” शब्द से, विशेष कुटुम्ब पेंशन संबंधी पंचाटों की बाबत, यह समझा जाएगा कि उसके अन्तर्गत कोई ऐसी संतान भी है जो उस व्यक्ति की सेवोन्मुक्ति या अशक्तता के पश्चात् उम विवाह से उत्पन्न हुई थी।”

37. नए/विनियम 141 क का अन्तःस्थापन—उक्त विनियमों के विनियम 141 के पश्चात् निम्नलिखित विनियम अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

‘141-क ऐसे व्यक्तियों की बाबत, जिनकी ऐसे कारणों से मृत्यु हुई हो जो न तो नौसैनिक सेवा से अभिसंबंधनीय है और न उसके कारण गुस्तर हुए हैं, उस उपखंड के भाग क में के पेंशन संबंधी फायदे विनियम 120 में विनिर्दिष्ट बारिशों को अनुज्ञेय होंगे।

स्पष्टीकरण—ऐसे पंचाट, विशेष कुटुम्ब पेंशन के प्रयोजन के लिए नामित बारिश को अनुवृत्त किए जाएंगे या यदि ऐसा कोई नामांकन न किया गया हो या नामित बारिश की मृत्यु हो गई हो या वह नीचे के खंड (1) से (iii) के अधीन निरहित कर दिया गया हो, तो ऐसे पात्र बारिश को अनुवृत्त किये जाएंगे जो जीवित बारिशों की सूची में सब से पहले हो। किन्तु निम्नलिखित को कोई भी पंचाट सबस नहीं किया जाएगा अर्थात् :—

(i) पिता या माता जो मृत नौसैनिक पर आश्रित नहीं है :

(ii) माता, जो अपने पुत्र की मृत्यु के समय विधवा हो या जो उसके पश्चात् विधवा हो गई हो और उमने पुनर्विवाह कर लिया हो।

(iii) पुत्री उसका विवाह हो जाने पर”

38. विनियम 146 का सफोधन—उक्त विनियमों के विनियम 146 में, उपविनियम (3) के पश्चात्, निम्नलिखित स्पष्टीकरण जोड़े जाएंगे, अर्थात्—

स्पष्टीकरण 1:—पेंशन का संराशीकरण, संपूरित निःशक्तता पेंशन के प्रति निर्देश से ऐसे मामलों में अनुज्ञात किया जाएगा जहां अशक्त बना देने वाली निःशक्तता हाथ-पांव की हानि, दृष्टि की पूर्ण हानि एक आंख की हानि, अंगोच्छेदन आदि हो या जहां पंचाट या निःशक्तता पेंशन जीवनपर्यन्त के लिए मंजूर की गई हो।

स्पष्टीकरण 2:—जहां किसी आफिसर को अस्थायी निःशक्तता पेंशन अनुवृत्त की गई हो किन्तु जिनमे पांच वर्ष की अर्हतक सेवा पूरी कर ली हो वहां पेंशन का संराशीकरण केवल निःशक्तता पेंशन के सेवा अर्पण के प्रति निर्देश से अनुज्ञात किया जाएगा।

39. नए अध्याय और विनियमों का अन्तःस्थापन : उक्त विनियमों के भाग 1 में (i) अध्याय 5 “अध्याय 6” के रूप में पुनःसंख्यांकित किया जाएगा और इस प्रकार पुनःसंख्यांकित अध्याय 6 के पूर्व, निम्नलिखित अध्याय अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

अध्याय 5

पेंशन का संराशीकरण-नौसैनिक जिनके अन्तर्गत ऐसे मास्टर मुख्य पैटी आफिसर जिन्हें अवैतनिक कमीशन अनुवृत्त किया गया हो और अल्प-कालिक सेवा कमीशन प्राप्त आफिसर (भूतपूर्व नौसैनिक) भी हैं

152 (क) (i) नौसैनिकों जिनके अन्तर्गत ऐसे मास्टर मुख्य पैटी आफिसर जिन्हें अवैतनिक कमीशन अनुवृत्त किया गया हो और अल्प-कालिक सेवा कमीशन प्राप्त आफिसर (भूतपूर्व नौसैनिक) भी हैं को, जो सेवा या विशेष पेंशन या स्थायी निःशक्तता पेंशन या अशक्तता पेंशन प्राप्त कर रहे हों, सूक्ष्म प्राधिकारी द्वारा उसकी शारीरिक योग्यता के बारे में चिकित्सा प्राधिकारी की रिपोर्ट और विनियम 8 और 75 में उपबन्धित विवेक का प्रयोग करते हुए लिए गए किसी विनियम के अधीन रहते हुए, ऐसे भाग के संराशित करने की अनुज्ञा दी जा सकेगी, जो उसकी (पूर्वतन संराशित किसी रकम को धटकर) पेंशन या

80GI/74—2

पेंशनों के आधे से अधिक नहीं होगी परन्तु यह तब जब कि असंराशित रकम रह गई रकम एक वर्ष में दो सौ चालीस रुपये से कम न हो। इस सीमा के प्रयोजन के लिए पेंशन की रकम की संगणना करने समय उसमें भारतीय या अन्य सरकारी राजस्वों से आवेदक को संवेद्य किसी अन्य स्थायी पेंशन या पेंशनों के असंराशीकृत भाग को जोड़ा जा सकेगा।

(2) संराशिकृत को जाने वाली पेंशन के भाग में, विनियम (i) में विहित सीमाओं के अधीन रहते हुए, केवल पूर्ण रुपण ही होंगे।

152 ख—(1) निःशक्तता पेंशन प्राप्त करने वाले किसी व्यक्ति को ऐसी पेंशन का कोई भाग संराशित करने की अनुज्ञा दी जा सकेगी परन्तु यह तब जब कि अशक्त बना देने वाली निःशक्तता हाथ-पांव की हानि, दृष्टि की पूर्ण हानि, एक आंख की हानि या अंगोच्छेदन आदि हो, या निःशक्तता पेंशन का पंचाट जीवनपर्यन्त के लिए मंजूर किया गया हो।

(2) ऐसे मामलों में जहां किसी व्यक्ति को अस्थायी निःशक्तता पेंशन अनुवृत्त की गई हो किन्तु उसने दस वर्ष या अधिक अर्हक सेवा पूरी कर ली हो, वहां पेंशन का संराशिकरण विनियम 110 के अधीन अनुज्ञेय विशेष पेंशन के प्रति निर्देश से अनुज्ञात किया जा सकेगा।

(3) यदि किसी व्यक्ति को (18 मार्च, 1961 के पूर्व प्रवृत्त आदेशों के अधीन स्थायी या अस्थायी) निःशक्तता पेंशन अनुवृत्त की गई थी तो उसे अपनी निःशक्तता पेंशन के उस भाग के किसी अंश को संराशित करने की अनुज्ञा दी जा सकेगी जो उस सेवा पेंशन के बराबर हो जो उसकी निःशक्तता के 20 प्रतिशत से नीचे पुनर्निर्धारित किए जाने की दशा में उसकी अनुज्ञेय होती।

152 ग—पेंशन का संराशिकरण कब अनुज्ञेय होगा : संराशिकरण सेवा निवृत्त पर या उसके पश्चात् किसी समय किया जा सकेगा।

152 घ संराशित मूल्य की संगणना :—(1) संराशीकरण का आधार, केन्द्रीय सरकार द्वारा मिविन पेंशन (संराशीकरण) नियम के अधीन समय-समय पर विहित मारणी के अनुसार होगा।

(2) व्यक्ति को वह आयु मानी जाएगी जो वह उस तारीख के ठीक अगले जन्मदिन को प्राप्त करेगा जिसको पेंशन का संराशीकरण पूर्ण होगा और वह हसित जीवन के आधार पर आयु के ऐसे वर्ष (वर्षों) की धटोतरी के अधीन होगी, जिनकी चिकित्सा प्राधिकारी द्वारा सिद्धा-रिण की जाए।

(3) किसी व्यक्ति को लागू मूल्य मारणी के संराशीकरण के लिए प्रशासनिक मंजूरी की तारीख और उस तारीख के बीच जिसको संराशीकरण पूर्ण होता है, उपान्तरित किए जाने की दशा में, संराशित मूल्य उपान्तरित मारणी के अनुसार संगणित किया जाएगा। (विनियम 152-अ देखें)।

152-क संराशीकरण कब पूर्ण होगा :—जब तक कि आवेदन विनियम 152 अ के अधीन वापस न ले लिया जाए, संराशीकरण निम्नलिखित दशाओं में पूर्ण हो जाएगा, अर्थात् जब पेंशन के संराशित अंश को प्राप्त करने का हक समाप्त होगा और संराशित मूल्य को प्राप्त करने का हक उस तारीख को उद्भूत होगा जिसको चिकित्सा प्राधिकारी चिकित्सीय प्रमाणपत्र पर हस्ताक्षर करता है। वास्तविक संदाय की तारीख कोई भी हो, संवत् रकम और पेंशन (पेंशनों) पर उसका प्रभाव वैसे ही होगा मानो संराशित मूल्य उस तारीख को संवत् किया गया था जिसको संराशीकरण पूर्ण हुआ था।

152-ज आवेदन का वापस लिया जाता :—(1) कोई व्यक्ति संराशीकरण के लिए अपने आवेदन को निम्नलिखित बशर्तों में वापस ले सकेगा, अर्थात्—

(i) जब उसको लागू मूल्य सारणी, संराशीकरण के लिए प्रशासनिक मंजूरी की तारीख और उस तारीख के बीच जिसको संराशीकरण पूर्ण हुआ हो, उपान्तरित की गई हो और उसे उपान्तरित सारणी पूर्वतन प्रवृत्त सारणी से कम अनुकूल हो, या

(ii) जब, हासिल जीवन की बश में चिकित्सा प्राधिकारी उसकी वास्तविक आयु में आयु के वर्षों की बढ़ोत्तरी की सिफारिश करता है, या

(iii) चिकित्सीय परीक्षा होने से पूर्व प्रेषित लिखित सूचना द्वारा किसी समय किन्तु यह विकल्प चिकित्सा प्राधिकारी के समक्ष उसके उपस्थित होने पर समाप्त हो जायगा।

(2) आवेदन की वापसी उस तारीख से चौबह दिन के भीतर प्रेषित लिखित सूचना द्वारा की जानी चाहिए, जिसको कोई व्यक्ति, यथास्थिति, उपान्तरित सारणी या चिकित्सा प्राधिकारी की सिफारिश की और उसके बदले में संश्लेष पंजीकृत राशि की सूचना प्राप्त करें।

152-छ उपगत किया गया आनुवंशिक व्यय—किसी व्यक्ति द्वारा अपनी पेंशन के किसी भाग के संराशीकरण के संबंध में उपगत किए गए किसी यात्रा या अन्य व्ययों की कोई पुनः प्रतिपूर्ति अनुशेष नहीं होगी।

152-ज प्रत्याशित/अन्तिम पेंशन का संराशीकरण : यदि किसी व्यक्ति के पेंशन के बाबे को अन्तिम रूप देने में किसी देरी का होना संभाव्य हो, तो संराशीकरण विवाद प्रत्याशित या अन्तिम पेंशन, यदि कोई हो, के आधार पर अन्तिम पेंशन के मंजूर किए जाने के समय आवश्यक समायोजनों के अधीन रहते हुए, अनुशात किया जा सकेगा। प्रत्याशित या अन्तिम पेंशन उन्हीं साधारण शर्तों के अधीन जो अन्तिम सेवा पेंशन के संराशीकरण को लागू होती है संराशित की जाएगी। अधिक्य में संदत्त की गई किसी प्रत्याशित या अन्तिम पेंशन के किसी भाग के संराशित मूल्य का प्रतिसंदाय सुनिश्चित करने के लिए, रक्षा लेखा नियंत्रक (पेंशन), पेंशनभांगी से संराशीकरण के लिए उसके आवेदन के साथ निम्नलिखित प्रारूप में एक घोषणा प्राप्त करेगा।

घोषणा का प्रारूप

(प्रत्याशित/अन्तिम पेंशन प्राप्त करने वाले आवेदक द्वारा भरा जाए)

यतः रक्षा लेखा नियंत्रक (पेंशन) ने मुझे प्रत्याशित/अन्तिम पेंशन के किसी भाग के संराशित मूल्य के नाते.....रु० की राशि, ऐसी जांच के पूरा होने की प्रत्याशा में अन्तिम रूप से अग्रिम में देने की सम्मति दे दी है जो मेरी पेंशन की रकम और परिणामस्वरूप पेंशन के उस भाग को नियम करने के लिए जो संराशित किया जाए, उसको समर्थ बनाने के लिए आवश्यक हो, मैं इसके द्वारा अभिस्वीकृत करता हूँ कि अग्रिम प्रतिगृहीत करने में, मैं यह पूर्णतः समझता हूँ कि मुझको अब संदत्त किया गया संराशित मूल्य आवश्यक प्रभु की जांच के पूरा हो जाने पर पुनरीक्षण के अधीन है और मैं वचन देता हूँ कि मुझे इस आधार पर किए गए ऐसे पुनरीक्षण के बारे में कोई आपत्ति नहीं होगी कि प्रत्याशित/अन्तिम पेंशन के भाग के संराशित मूल्य के रूप में मुझे अब संदत्त की जाने वाली अन्तिम रकम उस रकम से अधिक है जिस के लिए मैं अन्तिम रूप से हकवार पाया जाऊँ। मैं और वचन देता हूँ कि मैं उस रकम से जिसके लिए मैं अन्तिम रूप से हकवार पाया जाऊँ अधिक्य में मुझको अग्रिम दी गई कोई रकम रोकड़ में या पेंशन के पायातृत्वर्ती संदाय में से कटौती द्वारा प्रतिसंभृत करूँगा।

स्थान.....

तारीख.....

हस्ताक्षर

40. परिशिष्ट 1 का संशोधन—उक्त विनियमों के परिशिष्ट 1 में, नौसैनिक शीर्षक के नीचे सब संख्या 12 से संबंधित प्रविष्टियों में :—

(i) स्तंभ 2 में, “105” शंक के स्थान पर, “105 और 105-ख” शंक रखे जाएंगे :

(ii) स्तंभ 4 में, “केन्द्रीय सरकार” शब्दों के स्थान पर, “रक्षा लेखा नियंत्रक (पेंशन)” शब्द और कोष्ठक रखे जाएंगे।

41. परिशिष्ट 3 का संशोधन—उक्त विनियमों के परिशिष्ट 3 में, “पेंशन के लिए ग्रहक सेवा साधारण सूची के, आफिसर शीर्षक के नीचे, खण्ड (2) में, उपखंड (ख) में” आधा” शब्द के स्थान पर, “दो तिहाई” शब्द रखे जाएंगे।

42. परिशिष्ट 4 का संशोधन—उक्त विनियमों के परिशिष्ट 4 में पैरा (1) में, खण्ड (ख) के स्थान पर, निम्नलिखित खण्ड रखा जाएगा अर्थात्—

“(ख) वह कमांडर के अधिष्ठायी रैंक में प्रोन्नति के लिए सभी प्रकार से योग्य पाया गया हो किन्तु अधिष्ठायी कैडर में रिक्तियों की अपर्याप्ता के कारण इस प्रकार प्रोन्नति न किया गया हो।”

43. परिशिष्ट 5 का संशोधन, उक्त विनियमों के परिशिष्ट 5 में, (1) पैरा 3 में, अन्त में निम्नलिखित “स्पष्टीकरण” अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात्—

“स्पष्टीकरण—इस विनियम के अन्तर्गत, सेवा से उन्मुक्त कर दिए या अशक्त बना दिए जाने के पश्चात् हुई मृत्यु के मामले भी आते हैं।

(ii) पैरा 4 में “निःशक्तता” शब्द के पश्चात् “या मृत्यु” शब्द अन्तःस्थापित किए जाएंगे—

(iii) पैरा 6 में, अन्त में निम्नलिखित स्पष्टीकरण अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात्—

.....स्पष्टीकरण—यदि निःशक्तता का अन्तिम निर्धारण पचास प्रतिशत या अधिक था तो किसी ऐसे निःशक्तता पेंशन भोगी की मृत्यु, जिसकी निःशक्तता अपवृद्धि के आधार पर प्रतिगृहीत की गई हो, उरोंकन पैरा 3(ख)(ii) के अधीन नौसैनिक सेवा के कारण हुई प्रतिगृहीत की जा सकेगी। यदि निःशक्तता का अन्तिम प्रतिगृहीत निर्धारण पचास प्रतिशत से कम था तो मृत्यु उस सेवा के कारण हुई नहीं समझी जानी चाहिए।

उपरोक्त प्रक्रिया तब लागू होगी जब मृत्यु उस निःशक्तता के कारण हुई साबित की गई हो जिसकी बाबत निःशक्तता पेंशन अनुवत्त की गई थी। यदि यह बात न हो तो अशक्त बना देने वाली निःशक्तता के साथ मृत्यु के कारण की सद्गता प्रथमतः इस पैरा के उपबंधों के अनुसार अवधारित की जाएगी। यदि सद्गता उसके अधीन स्वीकार की जा सकती हो तो पूर्ववर्ती उप पैरा में की प्रक्रिया, और प्रश्न को अवधारित करने के लिए अपनाई जाएगी चाहे विशेष कुटुम्ब पेंशन के लिए हकदारी किसी ऐसे मामले में जहां अशक्त बना देने वाली निःशक्तता सेवा द्वारा गुरुतर हुई थी, स्वीकार की जा सकती हो।”

(iv) पैरा 10 खंड (घ) के स्थान पर, निम्नलिखित खंड रखा जाएगा, अर्थात्—

“(घ) युग्मित श्रंग :—

(i) युग्मित श्रंग, अर्थात् आँख, कान, बाहु और टांग एक साथ मानी जाएंगी, जहां निःशक्तता सेवा के कारण युग्मित श्रंगों में से किसी एक में हुई हो, वहां सेवोन्मुक्ति पर निर्धारण एक साथ कार्य करने

वाले युग्मित अंगों की कृत्यिक क्षमता की कमी के प्रति निर्देश से किया जाएगा इसलिए निर्धारण में युग्मित अंगों के कृत्यिक दोष सम्मिलित होंगे।

(ii) नीचे विनिर्दिष्ट अपवादों के अधीन रहने हुए, सेवा/इतर निःशक्तता, और क्षति या रोग के कारण सेवोन्मुक्ति के पश्चात् होने वाली सेवा इतर निःशक्तता में कोई पश्चात्पूर्व वृद्धि निर्धारण से अप-वर्जित कर दी जाएगी।

(iii) सेवोन्मुक्ति के समय हुए मामलों में, जहां युग्मित अंग अर्थात् आंख, कान, बाहु (जिनके अन्तर्गत हाथ भी हैं) और टांग (जिनके अन्तर्गत पांव भी हैं) में से केवल एक में सेवा के कारण नुकसान हुआ हो और दूसरे या तो सामान्य हो, या बहुत कम मात्रा में क्षतिग्रस्त हुआ हो। जहां खंड (ii) के अधीन प्रतिग्राह्य निःशक्तता और अन्य अवयव या अंग को निःशक्तता एक साथ मिलाकर किसी पश्चात्पूर्व तारीख को शत प्रतिशत पर निर्धारणीय हो वहां पेंशन के प्रयोजनों के लिए निर्धारण, बालू निर्धारण और शतप्रतिशत के बीच के अन्तर के आधे से बढ़ा दिया जाएगा। उदाहरणार्थ, एक आंख की हानि के लिए चालीस प्रतिशत दर पर कोई पंचाट प्राप्त करने वाला कोई ऐसा पेंशन भोगी जो बाद में किसी सेवा इतर कारण की वजह से अपनी दूसरी आंख की दृष्टि खो देता है, अपना पंचाट 70 प्रतिशत की दर तक बढ़ा लेगा, और किसी बाहु में लगी बन्धूक की गोली के भाव के लिए अस्सी प्रतिशत पर कोई पंचाट प्राप्त करने वाला कोई ऐसा पेंशन भोगी जिसकी दूसरी बाहु में तीव्र संधिशोथ बाद में पैदा हो जाता है, जिसके कारण वह शतप्रतिशत निःशक्त हो जाता है, तब प्रशिक्षण की दर पर पुनर्गठित पंचाट के लिए अर्हक होगा जहां अंगों के युग्म की संयुक्त निःशक्तता शतप्रतिशत से कम हो, किन्तु खंड (ii) के अधीन प्रतिग्राह्य निःशक्तता की तुलना में युग्म से भी अधिक गंभीर हो, वहां निर्धारण संयुक्त निःशक्तता के आधे तक बढ़ाया जाएगा। उदाहरणार्थ यदि एक आंख की दृष्टि की हानि के लिये तीस प्रतिशत की दर पर कोई पंचाट प्राप्त करने वाला कोई पेंशन भोगी किसी सेवा इतर कारण की वजह से दूसरी आंख की रोगी भागलः खो देता है और एक साथ दोनों आंखों की दृष्टि पूर्ण दृष्टि अस्सी प्रतिशत पर निर्धारणीय है, तो उसका पंचाट बालू शतप्रतिशत की दर तक बढ़ा दिया जाएगा।

(iv) पूर्ववर्ती खण्ड के उपबंध उम्र दशा में लागू हैं जहां अंगों के किसी युग्म का दूसरा युग्म किसी ऐसी सामान्य निःशक्तता (जैसे रुमेटाइड संधिशोथ) के कारण निःशक्त हो गया हो जिसकी वजह से युग्म का पहला युग्म भी उस दशा में निःशक्त हो गया होता यदि वह सेवा के परिणामस्वरूप नष्ट न हुआ होता या उसमें नुकसान न हुआ होता।

44. परिशिष्ट 6 का संशोधन, उक्त विनियमों के परिशिष्ट 6 में, प्रथम में "स्पष्टीकरण 2" में, अन्त में निम्नलिखित जोड़ा जाएगा, अर्थात्—

"नेपाल में निवास करने वाले गोरखा पेंशन भोगियों की दशा में प्रमाणपत्र, गोरखाओं के लिए भर्ती आफिसर/उपभर्ती आफिसर सहायक भर्ती आफिसर और नेपाल में भारतीय दूतावास के सैनिक सहायक/सहायक सैनिक सहायक/सहायक वायु सेना सहायक द्वारा भी हस्ताक्षरित/प्रति हस्ताक्षरित किया जा सकेगा।"

[एन० एच० १५० काइल सं० पी० एन०/2238 (पी०डी०) डो (पेंशन/)]

वित्त मंत्रालय (रक्षा/पेंशन) गै० सं० 1973 की सं० 4829 पेंशन
आर० एन० त्यागी,
उप सचिव

New Delhi, the 5th September, 1974

S.R.O. 309.—In exercise of the powers conferred by section 184 of the Navy Act, 1957 (62 of 1957), the Central Government hereby makes the following regulations further to amend the Navy (Pension) Regulations, 1964, published with the notification of the Government of India in the Ministry of Defence No. SRO 74, dated the 10th February, 1964, namely :—

1. Short title and commencement.—

- (1) These regulations may be called the Navy (Pension) Second Amendment Regulations, 1974.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Amendment of regulation 2.—In the Navy (Pension) Regulations, 1964 (hereinafter referred to as the said regulations) in regulation 2, after clause (h), the following clause shall be inserted, namely :—

"(hh) 'Qualifying active service mean all service which under any general or special orders qualifies for pension.'"

3. Amendment of regulation 16.—In regulation 16 of the said regulations, in sub-regulation (1), the following shall be inserted at the end, namely :—

"However, an officer in receipt of a disability pension shall continue to draw the disability element of his pension."

4. Amendment of regulation 17.—In regulation 17 of the said regulation —

- (1) For the marginal heading, the following shall be substituted, namely :—

"Acceptance of employment by officers who are granted Pension, Gratuity or other benefit."

- (2) For sub-regulation (2), the following sub-regulation shall be substituted, namely :—

"(2) An officer of the rank of Captain or above, whether in a substantive capacity or otherwise, who is granted a pension, gratuity or other benefit in respect of his naval service or who is likely to receive pension, gratuity or other benefit under these regulations shall also obtain such permission prior to accepting employment before the expiry of two years from the date his naval service ceases, in the following cases :—

- (a) commercial employment in private undertakings ;

- (b) employment in civil post under the Central or State Government or the Government of a Union Territory or in a post under a body corporate owned or controlled by the Government, if the officer had been allowed to retire prematurely at his own request. Such permission will not, however, be necessary if the officer had retired from the Navy in the normal course on completion of the standard service prescribed for his rank or if he had been invalided from the naval service on grounds of ill-health or physical disability."

5. Insertion of new regulation 28-A.—After regulation 28 of the said regulations, the following regulations shall be inserted, namely :—

"28-A. Re-assessment of disability permanently below pensionable degree at the time of invalidation : In cases where an officer's disability or its aggravation at the time of invalidation is permanently below the pensionable degree, he may claim to be brought before a medical board within a period of seven years from the date from which he was retired. If the disability is still assessed as permanently below the pensionable degree, no claim for re-assessment shall be considered."

6. Substitution of regulation 35.—For regulation 35 of the said regulations, the following regulation shall be substituted, namely :—

“35—Refusal to appear before a Resurvey Medical Board. In case a pensioner who has been asked under any regulation or order to appear before a resurvey medical board, for re-assessment of his disability, refuses to do so, the disability element or his pension shall be suspended from the date of such refusal. If, however, the pensioner has rendered less than five years qualifying service the disability pension as a whole shall be suspended.”

7. Substitution of regulation 40.—For regulation 40 of the said regulations, the following regulations shall be substituted, namely :

“40 —Period for grant of disability pension when the invaliding disability is incapable of improvement.—
(1) If the disability is certified on the basis of invaliding or a resurvey medical board, to be incapable of improvement, disability pension shall be granted for a period of ten years in the first instance. During this period the pensioner will have a right to claim re-assessment of his pension on the basis of aggravation, if any. Where the pension is modified as a result of re-assessment, the pension shall again be granted for a period of ten years from the date of the revised award provided the disability is still regarded as incapable of improvement. Each successive assessment at a higher or lower level will be for a period of ten years during which the pensioner will be given one opportunity to have his pension re-assessed on the basis of further aggravation.

(2) When the percentage of disablement has remained unmodified for ten years, the pensioner shall be brought before a re-survey medical board at the end of ten years and in the event of the disability still being regarded by the pension sanctioning authority as incapable of improvement, his pension shall be sanctioned for life. Thereafter, no revision of pension will be admissible.

(3) In cases where the invaliding disability is loss of limb(s), total loss of sight, loss of one eye, amputation etc., and where the question of improvement or worsening of its physical condition does not arise, the award shall be sanctioned for life.

“40-A Period of grant of disability pension when the invaliding disability is capable of improvement.—When the disability is accepted as capable of improvement, the period of an award calculated with reference to the date of the medical board shall not exceed one year. When the disability is accepted as aggravated by naval service, the duration of the disability element shall be determined with due regard to the provisions contained in Appendix V.”

8. Insertion of new Regulation 44 A.—After regulation 44 of the said regulations, the following regulation shall be inserted, namely :—

“44-A Admissibility of disability pension to a disabled Pensioner re-employed without disclosing his invalidation.—A pensioner, who, on his re-employment in the Navy, does not disclose that he was previously retired from service with the Armed Forces for medical unfitness, shall be debarred from the date of his re-employment from any disability pension admissible to him in respect of his previous service with the Armed Forces. If his re-employment is terminated on the re-employment, he is brought a medical board, his claim for a disability pension after the termination of re-employment will be submitted for orders of the Central Government. Such orders will duly take into consideration the effect of his employment in the Navy in aggravating a previous disability or introducing a new one.”

9. Amendment of regulation 50.—In regulation 50 of the said regulations, after clause (e), the following Explanation shall be inserted, namely :—

“Explanation.—The widowed mother of an officer who remarries during the life-time of the officer but becomes a widow again before his death, may be granted an award of dependants pension, if otherwise admissible. For the purpose of an pecuniary circumstances, resources, if any, available to the widow from her second husband, will also be taken into account.”

10. Amendment of regulation 51.—In regulation 51 of the said regulations, after Explanation 2, the following Explanation shall be added, namely :—

“Explanation 3.—The provisions of sub-clause (i) of clause (b) of sub-regulation (2) shall also apply to flights in civil or chartered aircraft.”

11. Amendment of regulation 53.—In regulation 53 of the said regulations, sub-regulation (2) shall be omitted.

12. Substitution of regulation 55.—For regulation 55 of the said regulations, the following regulation shall be substituted, namely :—

“55—Definition of the term legitimate children.—For the purpose of family pension, the term “legitimate children” shall include “validly adopted children.”

13. Amendment of regulation 58 and 59.—In regulation 58 and 59 of the said regulations, in sub-regulation (2), the provisos appearing at the end shall be omitted.

14. Amendment of regulation 67.—In regulation 67 of the said regulations,

(a) In the marginal heading, the words “on second widowhood” shall be omitted ;

(b) after the words “becoming a widow”, the following words shall be inserted, namely :—

“or on such marriage being annulled by divorce or desertion by the second husband,”

15. Amendment of regulation 77.—In regulation 77 of the said regulations, in sub-regulation (2), the “Explanation” shall be renumbered as ‘Explanation 1’ and after ‘Explanation 1’ as so re-numbered, the following ‘Explanation’ shall be inserted, namely :—

“Explanation 2.—An ex-reservist who had drawn a gratuity in lieu of reservists pension, will for the purpose of sub-regulation (1), be treated as if he was pensioner. In such a case, the grant of an enhanced pension if otherwise admissible will be subject to the recovery of the difference between the gratuity and the pension (including temporary increase and *ad-hoc* increase at the prevalent rates, if any), which he would have drawn from the date of his discharge to the date of his re-employment. The recovery due will be made within a period of three years from the date of his re-employment or re-enrolment in not more than thirty six instalments from his pay. The first instalment shall be payable within three months from the date of re-employment or re-enrolment.”

16. Amendment of regulation 79.—In regulation 79 of the said regulations, in sub-regulation (1), clauses (v), (vi), (vii) and (viii) shall be renumbered as (vii), (viii), (ix) and (x) respectively and before clause (vii) as so re-numbered, the following clauses shall be inserted, namely :—

“(v) Any period of absence without leave which is regularised as extraordinary leave without pay and allowances.

(vi) Any period intervening between the date of dismissal/discharge/release and that of its cancellation which is regularised as extraordinary leave without pay and allowances.”

17. Amendment of regulation 86.—In regulation 86 of the said regulation, for the Table, the following Table shall be substituted, namely :—

"RATES OF SERVICE PENSION—SAILORS"

Rank	Completed years of service	Rates of service pension			
		Group 'A'	Group 'B'	Group 'C'	Naval Aviation Sails other than those on Group 'A' rates of pay
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
		Rs. p.m.	Rs. p.m.	Rs. p.m.	Rs. p.m.
1. Seaman Class I or equivalent	15		53	43	56
	16		57	46	60
	17		61	49	63
	18		64	52	67
	19		68	55	71
	20		71	58	74
	21		75	61	78
2. Leading Seaman or equivalent	15		57	56	68
	16		61	60	73
	17		65	64	78
	18		69	68	82
	19		72	71	87
	20		76	75	91
	21		80	79	96
	22		84	83	100
	23		88	86	105
	24		91	90	109
	25		95	94	114
3. Petty Officer/Artificer, Class IV/Mechanician Class IV	15	74	72	72	80
	16	79	76	76	86
	17	84	81	81	91
	18	89	86	86	96
	19	94	91	91	102
	20	99	95	95	107
	21	104	100	100	112
	22		105	105	118
	23		110	110	123
	24		114	114	128
	25		119	119	134
4. Chief Petty Officer/Artificer Class III/Mechanician Class III	15	83	83	83	99
	16	88	88	88	105
	17	94	94	94	112
	18	99	99	99	118
	19	105	105	105	125
	20	110	110	110	131
	21	116	116	116	138
	22		121	121	145
	23		127	127	151
	24		132	132	158
	25		138	138	164

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
5. Artificer Class II/Mechanician Class II	15	96			
	16	103			
	17	109			
	18	115			
	19	122			
	20	128			
	21	135			
	22	141			
	23	147			
	24	154			
	25	160			
6. Artificer Class I/Mechanician Class I	15	102			
	16	109			
	17	116			
	18	123			
	19	130			
	20	136			
	21	143			
	22	150			
	23	157			
	24	164			
	25	170			
7. Chief Artificer/Chief Mechanician	15	116			
	16	124			
	17	131			
	18	139			
	19	147			
	20	154			
	21	162			
	22	170			
	23	178			
	24	185			
	25	193			
8. Master CPO Class II	15	120	95	113	
	16	128	102	121	
	17	136	108	129	
	18	144	114	136	
	19	152	121	144	
	20	159	127	151	
	21	167	133	159	
	22	175	140	166	
	23	183	146	174	
	24	191	152	181	
	25	199	159	189	
	26	207	165	196	
	27	215	171	204	
	28	223	178	211	
	29	231	184	219	
	30	239	190	226	
9. Master CPO Class I	15	131	107	125	
	16	140	114	133	
	17	148	121	141	
	18	157	128	150	
	19	166	135	168	

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
	20	174	142	166	
	21	183	149	174	
	22	192	156	183	
	23	201	163	191	
	24	209	170	199	
	25	218	178	208	
	26	227	185	216	
	27	235	192	224	
	28	244	199	232	
	29	253	206	241	
	30	261	213	249"	

18. Insertion of new regulation 94A.—After regulation 94 of the said regulations, the following regulation shall be inserted, namely :—

"94-A. Terminal gratuity to individuals discharged on completion of prescribed engagement with some non-qualifying service.—A reservist who is discharged on completion of his prescribed engagement but who fails to qualify for a reservists pension on account of his service including some non-qualifying period which has the effect of reducing the period of his qualifying service to less than fifteen years, may be granted a terminal gratuity at the rate admissible to sailor for each completed year of active service provided he has rendered not less than five years of qualifying active service."

19. Insertion of new regulation 101-A and 101-B.—After regulation 101 of the said regulation, the following regulations shall be inserted, namely :—

"101-A Individuals discharged on account of their being permanently in low medical category.—Individuals who are placed in a lower medical category (other than 'E') permanently and who are discharged because no alternative employment suitable to their low medical category could be provided shall be deemed to have been invalidated from service for the purpose of the Rules laid down in Appendix V of these Regulations.

Explanation.—The above provision shall also apply to individuals who are placed in a low medical category while on extended service and on discharge on that account before the completion of the period of their extension.

101-B Reservists discharged on account of being placed in a low medical category.—(1) A reservist who is placed permanently in a lower medical category (other than 'E') and is discharged from the Fleet Reserve on that account will be deemed to have been invalidated out of service for the purpose of the rules laid down in Appendix 'V' of these Regulations.

(2) An individual who is found to be ineligible for the grant of disability pension shall be paid service gratuity as admissible under regulation 89".

20. Insertion of new regulation 105-A.—After regulation 105 of the said regulations, the following regulations shall be inserted, namely :—

"105-A. Re-assessment of the disability which is permanently below 20 per cent at the time of invaliding.—In cases where an individual's disability or its aggravation at the time of invaliding is permanently below pensionable degree, he may claim to be brought before a medical board within a period of seven years from the date of his discharge. If the disability is still assessed as permanent below the pensionable degree, no claim for re-assessment shall be considered.

105-B. Disability at the time of discharge.—(1) A sailor, who is discharged from service after he has completed the period of his engagement and is, at the time of discharge found to be suffering

from a disability attributable to or aggravated by naval service, may at the discretion of the competent authority be granted in addition to the service pension admissible, a disability element as if he has been discharged on account of that disability.

(2) The disability element of pension will be assessed on the accepted degree of disablement at the time of retirement or discharge on the basis of the rank held on the date on which the wound or injury was sustained or in the case of a disease on the date of the first removal from duty on account of that disease.

(3) The provisions in sub-regulations (1) and (2) shall also apply to sailors discharged from service on completion of the period of their engagement and who have earned only a service gratuity."

21. Substitution of regulation 106.—Of the said regulations, the following regulation shall be substituted, namely :—

"106 Rank for assessment of disability pension.—The rank for the purpose of assessment of service and disability elements of disability pension shall be the substantive rank or higher paid acting rank, if any, held by the individual or any of the following dates whichever is the most favourable :—

- the date of invaliding from service ; or
- the date on which he sustained the wound or injury or was first removed from duty on account of a disease causing his disablement ; or
- if he rendered further service, and during and as a result of such service suffered aggravation or disability, the date of the later removal from duty on account of the disability

Explanation.— In the case of an individual who on account of misconduct or inefficiency is reverted to a lower rank subsequent to the date on which the wound or injury was sustained or disability contracted, the rank for assessment of service and disability elements of disability pension shall be the rank held on the date of invaliding from service."

22. Amendment of regulation 107.—In regulation 107 of the said regulations, against clause (b) of the Table, for item (i) the following item shall be substituted, namely :—

- If the disability was sustained while on flying or parachute jumping duty in an aircraft or while being carried on duty in an aircraft under proper authority, the minimum service pension appropriate to his rank and group.

23. Substitution of regulation 109.—For regulation 109 of the said regulations, the following regulation shall be substituted, namely :—

"109. Period of grant of disability pension when the invaliding disability is incapable of improvement—

(1) If the disability is accepted as attributable to or aggravated by naval service and is certified on the basis of an invaliding or a re-survey medical board to be incapable of improvement, disability pension may be granted for a period of ten years in the first instance. During this period, the pensioner will have a right to claim re-assessment of his pension on the basis of aggravation, if any. Where pension is modified as a result of re-assessment, the pension may again be granted for a period of ten years from the date of the revised award, provided the disability is still regarded as incapable of improvement. Each successive assessment at higher or lower rate will be for a period of ten years during which the pensioner will be given one opportunity to have his pension re assessed on the basis of further aggravation.

- When the percentage of disablement has remained unmodified for a period of ten years, the pensioner shall be brought before a resurvey medical board

and in the event of the disability still being regarded by the pension sanctioning authority as incapable of improvement, his pension may be sanctioned for life. Thereafter no review of pension will be admissible.

- (3) In cases where the invaliding disability is loss of limb(s) total loss of sight, loss of one eye, emputation, etc. and when the question of improvement/worsening of its physical condition does not arise, the award shall be sanctioned for life."

24. Insertion of new regulation 109-A.—After regulation 109 of the said regulations, the following regulation shall be inserted, namely:—

"109-A Period of grant of disability pension when disability is capable of improvement.—(1) If the disability is accepted as attributable to naval service but regarded as capable of improvement, an award may normally be made for a period of three years from the date from which a disability pension is admissible or in a case where a disability pension was in issue for a specific period, from the date of expiry of the previous award :

Provided that in cases where the duration of the disability at the accepted degree of disablement is considered to be less than three years, the period of an award calculated with reference to the date of the last medical board shall not exceed the period of duration of the disability at that degree.

- (2) An award may, however, be made in any individual case for such longer or shorter period as may be prescribed by the Central Government either generally or in respect of a particular disability.
- (3) If the disability is accepted as aggravated by naval service, the duration of an award shall be determined with due regard to the relevant provisions in the Rules laid down in Appendix 'V' of these Regulations."

25. Substitution of regulation 112: For regulation 112 of the said regulations, the following regulation shall be substituted, namely :—

"112—Refusal to appear before a resurvey medical board—The disability pension of an individual who is required under any rules or orders to appear before a resurvey medical board for re-assessment of his disability but refuses to appear before the medical board, shall be suspended from the date of such refusal. If, however, he had rendered ten years or more of qualifying service, special pension admissible under regulation 98 read with regulation 96 shall be granted from that date. This award shall be readjusted against the disability pension which may be subsequently granted."

26. Insertion of new Regulation 113-A: After regulation 113 of the said regulations, the following regulation shall be inserted, namely :—

"113-A. Admissibility of disability pension to a pensioner re-employed/re-enrolled without disclosing his invalidation—A pensioner, who on his re-employment or re-enrolment in the Navy does not disclose that he was previously retired or discharged from service with the Armed Forces for medical unfitness, shall be debarred from the date of his re-employment or re-enrolment from any disability pension admissible to him in respect of his previous service with the Armed Forces. If his re-employment or re-enrolment is terminated on account of his medical unfitness or if on termination of the re-employment or re-enrolment, he is brought before a medical board, his claim for a disability pension after termination of the re-employment or re-enrolment will be submitted for orders of the Central Government. Such orders will duly take into consideration the effect of his re-employment or re-enrolment in the Navy

service in aggravating a previous disability or introducing a new one."

27. Amendment of regulation 120: In regulation 120 of the said regulations,

- (1) at serial number 4, after the words "legitimate son" the following words and brackets shall be inserted, namely :—

"(including validly adopted)";

- (2) at serial number 5, after the words "legitimate daughter" the following words and brackets shall be inserted, namely :—

"(including validly adopted) ;

- (3) the existing "Explanation" shall be renumbered as "Explanation 1" as so re-numbered, the following Explanations shall be inserted, namely :—

"Explanation 2—The term widow used in the above or any other regulation in this sub-section in respect of special family pensionary awards, shall be deemed to include such a widow who was married after the individual's discharge or invalidment.

Explanation 3—The term child used in the above or any other regulation in this sub-section, in respect of special family pensionary awards, shall be deemed to include such a child born out of a marriage after discharge or invalidment of the individual."

28. Amendment of regulation 121: In regulation 121 of the said regulations, for the words "or an adopted or step child", the words "or a step child" shall be substituted.

29. Amendment of regulation 124: In regulation 124 of the said regulations,

- (1) in clause (a)—

- (i) for sub-clause (iv), the following sub-clause shall be substituted, namely :—

"(iv) If a father is below 50 years of age on the date referred to in sub-clause (i), he will be deemed to be eligible for the original grant of pension as a first life award, provided the widow or mother of the deceased sailor is also alive. On his death or disqualification, the person shall be transferred to the widow or continued to the mother under regulations 130 and 131 respectively, as the case may be. If a father below 50 years of age is the sole survivor, he will remain ineligible for the grant of family pension for so long as he does not attain the age of 50 years."

- (ii) the following explanation shall be inserted at the end namely :—

"Explanation :—The date on which the pension sanctioning authority decides that the claim to family pension is admissible, shall mean the date on which the draft pension payment order is approved by the Controller of Defence Accounts (Pensions) and the action for actual grant and notification thereof is commenced."

- (2) clause (b) shall re-lettered as clause "(b)(i)" and after clause (b) (i) as so relettered, the following sub-clause shall be inserted, namely :—

"(ii) if the father is the highest eligible heir for the grant of family pension and is below 50 years of age on the date referred to in clause (a)(i), he will be deemed to be eligible for the original grant of pension as a first life award, provided the mother of the deceased sailor is also alive. On his death or disqualification, the pension will be continued to the mother under regulation 131. If a father below 50 years of age is the sole survivor, he will remain ineligible for the grant of family pension for so long as he does not attain the age of 50 years."

30. Substitution of regulation 125 : For regulation 125 of the said regulations, the following regulation shall be substituted namely :—

"125.—Date from which a grant of special family pension takes effect—

- (1) The original grant of special family pension shall be made as a first life award from the date following that of casualty which created the claim, to the highest living heir on the date referred to in regulation 124(a)(i). Pending enquiry award already paid, if any, shall be adjusted in accordance with regulation 177 of the Navy (Pension) Regulation, 1964.
- (2) If on the date referred to in sub-regulation (1), all the eligible members are dead or disqualified, the arrears may only be paid at the discretion of the Central Government.
- (3) In no case shall claims preferred after incurring of disqualification be entertained."

31. Amendment of regulation 126 :—In regulation 126 of the said regulations, clauses (c) and (d) shall be re-lettered as clauses (d) and (e) respectively and before clause (d) as so re-lettered, the following clause shall be inserted, namely :—

"(c) Family pension under these regulations shall not be abated or discontinued by the grant of a pension under the Central or State (Extraordinary) Pension rules. A special family pension under these regulations and an extraordinary pension under the civil rules in respect of the same person will not, however, be admissible."

32. Substitution of regulation 127 : For regulation 127 of the said regulations, the following regulation shall be substituted, namely :—

"127.—Rank and group on which special family pension and gratuity is assessed—The special family pension and gratuity shall be assessed on the substantive rank or higher paid acting rank, if any, and group held by an individual on any of the following dates, whichever is the most favourable :—

- (a) The date of death occurs in service, or date of discharge or invaliding if death takes place after discharge or invaliding ; or
- (b) the date on which the individual sustained the wound or injury or was first removed from duty on account of the disease causing his death ; or
- (c) If he rendered further service and during and as a result of such service suffered aggravation of the disability, the date of his later removal from duty on account of the disability.

Explanation :—In the case of an individual, who on account of misconduct or inefficiency, is reverted to a lower rank subsequent to the date on which the cause of death originated, the rank for assessment of special family pension and gratuity shall be the rank held on the date mentioned in clause (a)."

33. Amendment of regulation 129 : In regulation 129 of the said regulations, for clause (a), the following clause shall be substituted, namely :—

"(a) If the recipient of a special family pension refuses to contribute proportionately towards the support of other eligible heirs in the family who were dependent upon the deceased sailor, or if the pension is in the name of a child but is not devoted to the interests of the family generally, the competent authority may on the basis of the verification/investigation report rendered by the recruiting organisation and attested or countersigned by any one of the undermentioned local civil authorities divide at his discretion for reasons to be recorded in writing the special family pension among the eligible heir(s) of the deceased sailors :—

- (i) Sarpanch of village

(ii) Any serving or retired Gazetted Officer, civil or military, including JCO

(iii) Sub Postmaster

(iv) Qanungo or Patwari

(v) Sub-Inspector of Police

(vi) A member of a Municipal Corporation or Committee or of a Zila Parishad/District Board

(vii) Panchayat President/Village Munsif/Patel/Village Officer/Panchayat Executive Officer

(viii) Member of Parliament/Member of Legislative Assembly/Member of Legislative Council

(ix) Oath Commissioner/Notary Public.

Explanation :—The competent authority may order similar division of family pension at the time of initial grant if at the time of initial investigation of a claim it is found that the nominated heir is not living a communal life with other eligible heirs or he/she is not willing to contribute proportionately towards their support."

34. Amendment of regulation 132 : In regulation 132 of the said regulations, the clause (a) shall be numbered as sub-regulation (1) and after sub-regulation (1) as so re-numbered, the following sub-regulation shall be inserted, namely :—

"(2) A special family pension of a widow which was discontinued on her re-marriage with a person other than the real brother of her deceased husband, may be restored to her when her re-marriage is annulled by divorce, desertion or death of the second husband provided she is left in a destitute condition and was not in receipt of a second life award. Such cases will be submitted to the Central Government for consideration on individual merits.

35. Amendment of regulation 133 : In regulation 133 of the said regulations, in clause (a), the Explanation shall be re-numbered as "Explanation 1" and after Explanation 1 as so re-numbered, the following Explanation should be inserted, namely :—

"Explanation 2—The provisions of clause (a) (ii) shall also apply to flights in a civil or chartered aircraft for so long as similar orders exist in respect of Central Civil Government Servants."

36. Amendment of regulation 134 : In regulation 134 of the said regulations,

- (i) the brackets of figure "(1)" appearing in the beginning shall be omitted ;
- (ii) after the word "natural", the brackets and words "(including validly adopted)" shall be inserted ;
- (iii) Sub-regulation (2) shall be omitted ;
- (iv) The following shall be inserted at the end as an "Explanation", namely :—

"Explanation :—The term "child" used in the above or other regulation in this sub-section, in respect of special family pensionary awards shall be deemed to include such a child born out of a marriage after discharge or invalidment of the individual."

37. Insertion of new regulation 141-A : After regulation 141 of the said regulations, the following regulation shall be inserted, namely :—

"141-A—In respect of individuals who die of causes neither attributable to nor aggravated by naval service, the pensionary benefits in part A of this sub-section shall be admissible to the heirs specified in regulation 120.

Explanation :—The awards will be granted to the heir nominated for the purpose of special family pension or if there is no such nomination or the

nominated heir is dead or disqualified under clauses (i) to (iii) below, to the eligible heir who stands highest in the list of living heirs. No award will, however, be paid to—

- (i) Father or mother who was not dependent on the deceased sailor;
- (ii) a mother, who is widow at the time of her son's death or who have become widow thereafter, has remarried;
- (iii) a daughter in the event of her marriage."

38. Amendment of regulation 146: In regulation 146 of the said regulations, after sub-regulation (3), the following Explanations shall be added, namely:—

Explanation 1: Commutation of pension shall be allowed with reference to total disability pension in cases where the invaliding disability is loss of limb(s), total loss of sight, loss of one eye, amputation etc. or where the award or disability pension is sanctioned for life.

Explanation 2: Where the officer has been granted temporary disability pension but has completed five years qualifying service commutation of pension shall be allowed with reference to the service element of disability pension only."

39. Insertion of new Chapter and regulations: In Part I of the said regulations,

- (1) Chapter V shall be re-numbered as "Chapter VI" and before Chapter VI as so renumbered the following Chapter shall be inserted, namely:—

CHAPTER-V

Commutation of pension—Sailors including the MCPOs granted Honorary Commissions and Short Service Commissioned Officers (ex-Sailors).

152-A. (1) Sailors including the MCPOs granted Honorary Commission and Short Service Commissioned Officers (ex-Sailors) who are in receipt of a service or special pension or a permanent disability pension or invalid pension may be permitted by the competent authority, subject to the report of a medical authority as to his physical fitness and to any decision taken in the exercise of the discretion provided in regulations 8 and 75, to commute a portion, not exceeding one half of his pension or pensions (less any amount previously commuted) provided that the amount left uncommuted is not less than rupees two hundred and forty a year. In calculating the amount of pension for the purpose of this limit, there may be added to it the un-commuted portion of any other permanent pension or pensions payable to the applicant from Indian or other Government revenues.

- (2) The portion of pension to be commuted will consist of whole rupees only subject to the limits prescribed in sub-regulation (1).

152-B. (1) An individual in receipt of disability pension may be allowed to commute a portion of such pension provided the invaliding disability is loss of limb(s) total loss of sight, loss of one eye, amputation, etc., or the award of disability pension is sanctioned for life.

- (2) In cases where the individual has been granted temporary disability pension but has completed ten years or more qualifying service, commutation of pension may be allowed with reference to the special pension admissible under regulation 110.

- (3) If an individual was granted disability pension (permanent or temporary under the orders in force prior to the 18th March, 1961) he may be allowed to commute a portion of that part of his disability pension which is equal to the service pension which would be admissible to him in the event of his disability being re-assessed below 20 per cent.

152-C. When Commutation of Pension is Permissible. Commutation may take place on retirement or at any time subsequent thereto.

152-D. Calculation of Commuted Value.

- (1) The basis for commutation shall be according to the table prescribed by the Central Government from time to time under the Civil Pension (Commutation) Rules.
- (2) The age of the individual shall be taken as being the age he will attain on the next birthday following the date on which the commutation of pension shall become absolute subject to such addition of year(s) of age in the base of impaired life, as may be recommended by the medical authority.
- (3) In the event of the table of values applicable to an individual being modified between the date of administrative sanction to commutation and the date on which commutation is due to become absolute, the commuted value shall be calculated in accordance with the modified table (see Regulation 152-F).

152-E. When Commutation becomes absolute. Unless the application is withdrawn under regulation 152-F commutation shall become absolute, i.e., the title to receive the commuted portion of the pension shall cease and the title to receive the commuted value shall accrue on the date on which the medical authority signs the medical certificate. Whatever the date of actual payment, the amount paid and the effect upon the pension(s) shall be the same as if the commuted value were paid on the date on which the commutation became absolute.

152-F. Withdrawal of Application: (1) An individual may withdraw his application for commutation,

- (i) When the table of values applicable to him is modified between the date of administrative sanction to the commutation and the date on which commutation becomes absolute, and the modified table is less favourable to him than that previously in force; or
 - (ii) when, in the case of impaired lives, the medical authority recommends an addition of years of age to his actual age; or
 - (iii) at any time by written notice despatched before medical examination is due to take place, but this option shall expire on his appearance before the medical authority.
- (2) Withdrawal of application must be made by written notice, despatched within 14 days of the date on which the individual receives intimation of the modified table or of the recommendation of the medical authority and of the capital sum payable in lieu thereof, as the case may be.

152-G. Incidental Expenses incurred.—No re-inbursement of any travelling or other expenses incurred by an individual in connection with the commutation of a portion of his pension shall be admissible.

152-H. Commutation of anticipatory/provisional pension.—If some delay is likely to arise in the finalisation of pension claim of an individual, commutation may be allowed on the anticipatory or provisional pension, if any, in issue subject to necessary adjustments when the final pension is sanctioned. The anticipatory or provisional pension will be commuted under the same general conditions as apply to commutation of final service pension. To ensure re-payment of the commuted value of the portion of an anticipatory or provisional pension paid in excess, the Controller of Defence Accounts (Pensions) will obtain from the pensioner a declaration in the following form along with his application for commutation:—

FORM OF DECLARATION

(To be completed by the applicant in receipt of anticipatory/provisional pension).

Whereas the Controller of Defence Accounts (Pensions) has consented provisionally to advance to me the sum of Rs. being the commuted value of a portion of the anticipatory/provisional pension in anticipation of the completion of the enquiries necessary to enable him to fix the amount of my pension and consequently the part of pension that may be commuted, I hereby acknowledge that in accepting the advance, I fully understand that the commuted value now paid to me is subject to revision of the completion of the necessary formal enquiries and I promise to have no objection to such revision on the ground that the provisional amount now to be paid to me as the commuted value of the part of anticipatory/provisional pension, exceeds the amount to which I may be eventually found entitled. I further promise to repay either in cash or by deduction from subsequent payment of pension any amount advanced to me in excess of the amount to which I may be eventually found entitled.

Signature _____

Station _____

Date _____

40. Amendment of Appendix I.—In appendix I of the said regulations, under the heading 'SAIORS', in the entries relating to item No. 12,

(i) in column, 2, for the figures '105', the figures '195 and 105-B' shall be substituted;

(ii) in column 4, for the words "The Central Government" the words and brackets "Controller of Defence Accounts (Pensions)" shall be substituted

41. Amendment of Appendix III.—In appendix III of the said regulations under the heading "Qualifying Service for pension"—Officer of the "General List", in clause (2), in sub-clause (a), for the words "one half", the words "two-thirds" shall be substituted.

42. Amendment of Appendix IV.—In Appendix IV of the said regulations, in paragraph (1), for clause (b), the following clauses shall be substituted, namely :—

"(b) He has been found fit in all respects for promotion to the substantive rank of Commander but has not been so promoted owing to insufficiency of vacancies in the substantive cadre."

43. Amendment to Appendix V.—In Appendix V of the said regulations;

(i) in paragraph 3, the following "Explanation" shall be inserted at the end, namely :—

"Explanation.—This regulation also covers cases of death after discharge or invaliding from service."

(ii) in paragraph 4, after the word "disablement", the words "or death" shall be inserted;

(iii) in paragraph 6, the following Explanation shall be inserted at the end, namely :—

"Explanation.—Death of a disability pensioner whose disablement has been accepted on the basis of aggravation may also be accepted as due to naval service under paragraph 3(b)(ii) above if the last assessment of disablement was 50 per cent or above. If the last accepted assessment of disablement was less than 50 per cent, death should not be regarded as due to service."

The above procedure will apply when death is established as due to the disability in respect of which disability pension was granted. If this is not the case, the identification of the cause of death with the invaliding disability will first be determined in accordance with the provisions of this paragraph. If the identity can be conceded thereunder, the procedure in the preceding sub-paragraph will be followed for determining the further point whether entitlement to special family pension can be conceded in a case where an invaliding disability was aggravated by service."

(iv) in paragraph 10, for clause (d), the following clause shall be substituted, namely :—

"(d) Paired Organs—

(i) Paired organs, namely eyes, ears, arms and legs shall be considered together, where disablement due to service occurs in one of a pair of organs, assessment on discharge will be made with reference to the diminution of the functional capacity of the organs working together. Therefore, assessment will include functional defect of the pair of organs.

(ii) Subject to the exceptions specified below, any subsequent increase in the non-service disablement and non-service disablement arising after discharge whether due to injury or disease will be excluded from the assessment.

(iii) Cases arise in which at the time of discharge there is damage by service to only one of the paired organs namely eyes, ears, arms (including hands) and legs (including feet) and the other is, either normal or impaired in a minor degree. Where the disablement acceptable under clause (ii) and the disablement of the other limb or organ are together assessable at any subsequent date at 100 per cent, the assessment for pension purposes will be increased by one half of the difference between the current assessment and 100 per cent. For instance a pensioner receiving an award at 40 per cent rate for the loss of an eye who later loses the sight of his other eye through a non-service cause, will have his award increased to 70 per cent rate; and a pensioner with an award at 80 per cent for a gunshot found of an arm who later develops severe arthritis of his other arm, thereby being 100 per cent disabled, will qualify for a revised award at 90 per cent rate. Where the combined disablement of the pair of organs is less than 100 per cent, but is more than twice as serious as the disablement acceptable under clause (ii), the assessment will be increased to one half of the combined disablement. If, for example, a pensioner with an award at 30 per cent rate for the loss of vision of one eye partially loses the sight of the other eye through a non-service cause the defective vision of both eyes together is assessable at 80 per cent, his award will be increased to 40 per cent rate.

(iv) The provisions of the preceding clause are applicable even where the second of a pair of organs has been disabled by some generalised disability (e.g. rheumatoid arthritis) which would have also disabled the first of the pair if it had not been lost or damaged as the result of service."

44. Amendment of Appendix VI.—In Appendix VI of the said regulations, the Form I, in "Explanation 2", the following shall be added at the end, namely :—

"In the case of Gorkha pensioners residing in Nepal, the certificate may also be signed/countersigned by the Recruiting Officer/Deputy Recruiting Officer/Assistant Recruiting Officer for Gorkhas and Military Attache/Assistant Military Attache/Assistant Air Attache to the Indian Embassy in Nepal."

[NHQ File No. PN/2238 (PC XIV)]

Min of Fin (Def/Pens) u. o. No. 1677 of 1974

R. N. TYAGI, Dy. Secy.

नई दिल्ली, 20 सितम्बर, 1974

क्र० नि० प्रा० 310.—छावनी अधिनियम 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार पत्रद्वारा अधिसूचित करती है कि केन्द्रीय सरकार द्वारा श्री राम लाल प्रथम वर्ग भजिस्ट्रेट, के त्याग पत्र को स्वीकार कर लिए जाने के कारण छावनी बोर्ड वाराणसी की सदस्यता में एक रिक्ति हो गई है।

[काहम सं० 19/57/सी०/एल० एण्ड सी०/68/2733-सी०/डी०

(क्यू० एण्ड सी०)]

New Delhi, the 20th September, 1974

S.R.O. 310.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1824), the Central Government hereby notifies that a vacancy has occurred in the membership of the Cantonment Board Varanasi by reason of the acceptance by the Central Government of the resignation of Shri Ram Lal Magistrate 1st Class.

[File No. 19/57/C/L&C/68/2733-C/D (Q&C)]

क्र० नि० प्रा० 311.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार एतद्वारा अधिसूचित करती है कि श्री एम० बी० सिंह प्रथम वर्ग मजिस्ट्रेट को, उस अधिनियम की धारा 13(4) (ख) के अधीन प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए जिला मजिस्ट्रेट वाराणसी द्वारा, श्री राम लाल प्रथम वर्ग मजिस्ट्रेट जिन्होंने त्याग पत्र दे दिया है के स्थान पर छावनी बोर्ड वाराणसी के सदस्य के रूप में नाम निर्दिष्ट किया गया है।

[फाइल सं० 19/57/सी०/एल० एण्ड सी०/68/2733-सी०/1/डी० (क्यू० एण्ड सी०)]

S.R.O. 311.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonment Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that Shri S. B. Singh Magistrate 1st Class has been nominated as a member of the Cantonment Board Varanasi by the District Magistrate Varanasi in exercise of the powers conferred under section 13(4)(b) of that Act vice Shri Ram Lal Magistrate 1st Class resigned.

[File No. 19/57/C/L&C/68/2733-C/1/D (Q&C)]

क्र० नि० प्रा० 312.—छावनी अधिनियम 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार एतद्वारा अधिसूचित करती है कि केन्द्रीय सरकार द्वारा श्री धार० पी० सिंह प्रथम वर्ग मजिस्ट्रेट के त्याग पत्र को स्वीकार कर लिए जाने के कारण छावनी बोर्ड फैजाबाद की सदस्यता में एक रिक्ति हो गई है।

[फाइल सं० 19/25/सी०/एल० एण्ड सी०/65/2735-सी०/डी० (क्यू० एण्ड सी०)]

S.R.O. 312.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonment Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that a vacancy has occurred in the membership of the Cantonment Board Faizabad by reason of the acceptance by the Central Government of the resignation of Shri R. P. Singh Magistrate 1st Class.

[File No. 19/25/C/L&C/65/2735-C/D (Q&C)]

क्र० नि० प्रा० 313.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार एतद्वारा अधिसूचित करती है कि श्री बलवंत राम प्रथम वर्ग मजिस्ट्रेट को, उस अधिनियम की धारा 13(4) (ख) के अधीन प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए जिला मजिस्ट्रेट फैजाबाद द्वारा, श्री धार० पी० सिंह प्रथम वर्ग मजिस्ट्रेट जिन्होंने त्याग पत्र दे दिया है के स्थान पर छावनी बोर्ड फैजाबाद के सदस्य के रूप में नाम निर्दिष्ट किया गया है।

[फाइल सं० 19/25/सी०/एल० एण्ड सी०/65/2735-सी०/1/डी० (क्यू० एण्ड सी०)]

S.R.O. 313.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonment Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that Shri Balwant Ram Magistrate 1st Class has been nominated as a member of the Cantonment Board Faizabad by the District Magistrate Faizabad in exercise of the powers conferred under section 13(4)(b) of that Act vice Shri R. P. Singh Magistrate 1st Class resigned.

[File No. 19/25/C/L&C/65/2735-C/1/D (Q&C)]

क्र० नि० प्रा० 314.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा अधिसूचित करती है कि छावनी बोर्ड, दानापुर की सदस्यता में कर्नल जे० डी० कटकर के त्यागपत्र को केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के कारण एक रिक्ति हो गई है।

[फाइल सं० 19/1/सी०/एल० एण्ड सी०/65/2736-सी०/डी० (क्यू० एण्ड सी०)]

S.R.O. 314.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924) the Central Government hereby notifies that a vacancy has occurred in the membership of the Cantonment Board, Dinapore by reason of the acceptance by the Central Government of the resignation of Col. J. D. Katkar.

[File No. 19/1/1/C/L&C/65/2736-C/D(Q&C)]

क्र० नि० प्रा० 315.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा अधिसूचित करती है कि जे० कर्नल बी० के० पी० सिन्हा को कर्नल जे० डी० कटकर के, जिन्होंने त्यागपत्र दे दिया है, स्थान पर छावनी बोर्ड दानापुर के एक सदस्य के रूप में नाम निर्दिष्ट किया गया है।

[फाइल सं० 19/1/सी०/एल० एण्ड सी०/65/2736-सी०/1/डी० (क्यू० एण्ड सी०)]

S.R.O. 315.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that Lt. Col. V. K. P. Sinha has been nominated as a member of the Cantonment Board Dinapore vice Col. J. D. Katkar who has resigned.

[File No. 19/1/C/L&C/65/2736-C/1/D (Q&C)]

क्र० नि० प्रा० 316.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा अधिसूचित करती है कि छावनी बोर्ड, दानापुर की सदस्यता में मेजर अशोक चरण के त्याग पत्र को केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के कारण एक रिक्ति हो गई है।

[फाइल सं० 19/1/सी०/एल० एण्ड सी०/65/2736-सी०/2/डी० (क्यू० एण्ड सी०)]

S.R.O. 316.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that a vacancy has occurred in the membership of the Cantonment Board, Dinapore by reason of the acceptance by the Central Government of the resignation of Major Ashok Charan.

[File No. 19/1/C/L&C/65/2736-C/2/D (Q&C)]

क्र० नि० प्रा० 317.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा अधिसूचित करती है कि मेजर के० जी० वासुदेव को मेजर अशोक चरण के, जिन्होंने त्यागपत्र दे दिया है, स्थान पर छावनी बोर्ड दानापुर के एक सदस्य के रूप में नाम निर्दिष्ट किया गया है।

[फाइल सं० 19/1/सी०/एल० एण्ड सी०/65/2736-सी०/3/डी० (क्यू० एण्ड सी०)]

S.R.O. 317.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that Major K. G. Vasdev has been nominated as a member of the Cantonment Board Dinapore vice Major Ashok Charan who has resigned.

[File No. 19/1/C/L&C/65/2736-C/3/D (Q&C)]

का० नि० प्रा० 318.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा अधिसूचित करती है कि छावनी बोर्ड, फिरोजपुर की सदस्यता में मेजर बी० एन० जलाली के त्यागपत्र को केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के कारण एक रिक्ति हो गई है।

[फाइल सं० 19/9/सी०/एल० एण्ड सी०/65/2732-सी०/डी० (क्यू० एण्ड सी०)]

S.R.O. 318.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924) the Central Government hereby notifies that a vacancy has occurred in the membership of the Cantonment Board, Ferozepore by reason of the acceptance by the Central Government of the resignation of Maj. B. N. Jalali.

[File No. 19/9/C/L&C/65/2732-C/D (Q&C)]

का० नि० प्रा० 319.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा अधिसूचित करती है कि मेजर जी० एम० मोहन को मेजर बी० एन० जलाली के, जिन्होंने त्यागपत्र दे दिया है, स्थान पर छावनी बोर्ड फिरोजपुर के एक सदस्य के रूप में नाम निर्दिष्ट किया गया है।

[फाइल सं० 19/9/सी०/एल० एण्ड सी०/65/2732-सी०/1/डी० (क्यू० एण्ड सी०)]

S.R.O. 319.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that Maj. G. C. Mohan has been nominated as a member of the Cantonment Board Ferozepore vice Maj. B. N. Jalali who has resigned.

[File No. 19/9/C/L&C/65/2732-C/1/D (Q&C)]

का० नि० प्रा० 320.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा अधिसूचित करती है कि छावनी बोर्ड, इलाहाबाद की सदस्यता में कप्तान ए० एल० पटेल के त्यागपत्र को केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के कारण एक रिक्ति हो गई है।

[फाइल सं० 19/48/सी०/एल० एण्ड सी०/66/2734-सी०/डी० (क्यू० एण्ड सी०)]

S.R.O. 320.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924) the Central Government hereby notifies that a vacancy has occurred in the membership of the Cantonment Board, Allahabad by reason of the acceptance by the Central Government of the resignation of Capt. A. S. Patel.

[File No. 19/48/C/L&C/66/2734-C/D (Q&C)]

का० नि० प्रा० 321.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा अधिसूचित करती है कि कप्तान एस० एन० पाण्डे को कप्तान ए० एम० पटेल के, जिन्होंने त्यागपत्र दे दिया है, स्थान पर छावनी बोर्ड इलाहाबाद के एक सदस्य के रूप में नाम निर्दिष्ट किया गया है।

[फाइल सं० 19/48/सी०/एल० एण्ड सी०/66/2734-सी०/1/डी० (क्यू० एण्ड सी०)]

S.R.O. 321.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that Capt. S. N. Pandey has been nominated as a member of the Cantonment Board Allahabad vice Capt. A. S. Patel who has resigned.

[File No. 19/48/C/L&C/66/2734-C/1/D (Q&C)]

नई दिल्ली, 21 सितम्बर, 1974

का० नि० प्रा० 322.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा अधिसूचित करती है कि छावनी बोर्ड, झांसी की सदस्यता में मेजर एच० ए० यादव के त्यागपत्र को केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के कारण रिक्ति हो गई है।

[फाइल सं० 19/40/सी०/एल० एण्ड सी०/66/2737-सी०/डी० (क्यू० एण्ड सी०)]

New Delhi, the 21st September, 1974

S.R.O. 322.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924) the Central Government hereby notifies that a vacancy has occurred in the membership of the Cantonment Board, Jhansi by reason of the acceptance by the Central Government of the resignation of Major H. S. Yadava.

[File No. 19/40/C/L&C/66/2737-C/D (Q&C)]

का० नि० प्रा० 323.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा अधिसूचित करती है कि कप्तान बी० पी० अस्थाना को मेजर एच० एम० यादव के, जिन्होंने त्यागपत्र दे दिया है, स्थान पर छावनी बोर्ड झांसी के एक सदस्य के रूप में नाम निर्दिष्ट किया गया है।

[फाइल सं० 19/40/सी०/एल० एण्ड सी०/66/2737-सी०/1/डी० (क्यू० एण्ड सी०)]

S.R.O. 323.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that Capt. V. P. Asthana has been nominated as a member of the Cantonment Board Jhansi vice Maj. H. S. Yadava who has resigned.

[File No. 19/40/C/L&C/66/2737-C/1/D (Q&C)]

का० नि० प्रा० 324.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा अधिसूचित करती है कि छावनी बोर्ड, बगशाई की सदस्यता में मेजर जी० बी० राय के त्यागपत्र को केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के कारण एक रिक्ति हो गई है।

[फाइल सं० 19/54/सी०/एल० एण्ड सी०/67/2742-सी०/डी० (क्यू० एण्ड सी०)]

S.R.O. 324.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924) the Central Government hereby notifies that a vacancy has occurred in the membership of the Cantonment Board, Dagshai by reason of the acceptance by the Central Government of the resignation of Major G. V. Rao.

[File No. 19/54/C/L&C/67/2742-C/D (Q&C)]

का० नि० प्रा० 325.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा अधिसूचित करती है कि ले० कर्नल० पी० के० भट्टाचार्य को मेजर जी० बी० राय के, जिन्होंने त्यागपत्र दे दिया है, स्थान पर छावनी बोर्ड बगशाई के एक सदस्य के रूप में नाम निर्दिष्ट किया गया है।

[फाइल सं० 19/54/सी०/एल० एण्ड सी०/67/2742-सी०/1/डी० (क्यू० एण्ड सी०)]

S.R.O. 325.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that Lt. Col. P. K. Bhattacharya has been nominated as a member of the Cantonment Board Dagshai vice Major G. V. Rao who has resigned.

[File No. 19/54/C/L&C/67/2742-C/1/D (Q&C)]

का० नि० आ० 326.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद् द्वारा अधिसूचित करती है कि छावनी बोर्ड, डलहौजी की सदस्यता में मेजर एम० के० दुता के त्यागपत्र को केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के कारण एक रिक्ति हो गई है।

(फाइल सं० 19/46/सी०/एन० एण्ड सी०/66/2741-सी०/डी० (क्यू० एण्ड सी०))

S.R.O. 326.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924) the Central Government hereby notifies that a vacancy has occurred in the membership of the Cantonment Board, Dalhousie by reason of the acceptance by the Central Government of the resignation of Major S. K. Dutta.

[File No. 19/46/C/L&C/66/2741-C/D (Q&C)]

का० नि० आ० 327.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद् द्वारा अधिसूचित करती है कि ले० कर्नल एम० एम० आनन्द को मेजर एम० के० दुता के, जिन्होंने त्यागपत्र दे दिया है, स्थान पर छावनी बोर्ड, डलहौजी के एक सदस्य के रूप में नाम निर्दिष्ट किया गया है।

(फाइल सं० 19/46/सी०/एन० एण्ड सी०/66/2741-सी०/1/डी० (क्यू० एण्ड सी०))

S.R.O. 327.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that Lt. Col. S. S. Anand has been nominated as a member of the Cantonment Board, Dalhousie vice Major S. K. Dutta who has resigned.

[File No. 19/46/C/L&C/66/2741-C/1/D (Q&C)]

का० नि० आ० 328.—यतः बादामी बाग छावनी (वाडों में विभाजन) नियम, 1974 का प्रारूप, भारत सरकार के रक्षा मन्त्रालय में अधिसूचना संख्या का० नि० आ० 112 तारीख 22 मार्च, 1974 के साथ, छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 31 द्वारा यथाप्रेक्षित भारत के राजपत्र भाग 2, खंड 4 तारीख 30 मार्च, 1974 में उससे संभावित प्रभावित होने वाले सभी व्यक्तियों से आशेष और सुभाव उक्त अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से 60 दिन के भीतर आमंत्रित करने हुए प्रकाशित किया गया था ;

और यतः उक्त राजपत्र जनता की 30 मार्च 1974 को उपलब्ध कराया गया था ;

और यतः इस प्रकार विनिर्दिष्ट तारीख से पूर्व किसी व्यक्ति से कोई आशेष और सुभाव प्राप्त नहीं हुए थे ;

अतः, अब, उक्त अधिनियम की धारा 31 द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद् द्वारा निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ (1) इन नियमों का नाम बादामी बाग छावनी (वाडों में विभाजन) नियम, 1974 है।

(2) ये नियम राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. छावनी का वाडों में विभाजन—छावनी बोर्ड बादामी बाग में निर्वाचित करने के प्रयोजन के लिए, उक्त छावनी 6 वाडों में विभाजित की जाएगी जिनके क्रमणः निम्नलिखित नाम होंगे :—

वाड सं० 1

वाड सं० 2

वाड सं० 3

वाड सं० 4

वाड सं० 5

वाड सं० 6

3. वाडों की सीमाएं—उक्त प्रत्येक बोर्ड की सीमाएं वे होंगी जो इन नियमों से उपाखण्ड अनुसूची में विनिर्दिष्ट की गई हैं।

4. निर्वाचित किए जाने वाले सदस्यों की संख्या—उक्त प्रत्येक वाड में निर्वाचित किए जाने वाले सदस्यों की संख्या वह होगी जो नीचे दी गई

वाड सं० 1	1
वाड सं० 2	1
वाड सं० 3	1
वाड सं० 4	1
वाड सं० 5	1
वाड सं० 6	1

अनुसूची

(वाडों की सीमाएं—नियम 3 देखें)

वाड सं० 1

यह सीमा सिविल क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 1 के पश्चिम में झेलम नदी की धारा के मध्यभाग से प्रारंभ होती है। यह दक्षिण-पूर्व की ओर सिविल क्षेत्र सीमा के साथ-साथ श्री जय नारायण दाम और श्री सी० ए० हिट्टर के मकान (दोनों समाविष्ट) के साथ-साथ सिविल क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 1 और 2 से होती हुई एम० ई० एम० रोड से इसके मिलने के स्थान पर स्थित स्तंभ सं० 3 तक जाती है। तब यह उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ जाती है और एम० ई० एम० छावनी बोर्ड रोड (दोनों अपवर्जित) के साथ-साथ, सिविल क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 4 और 5 से होती हुई, एम० ई० एम० वाटर वर्क्स के सामने स्थित सिविल क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 6 तक जाती है। वहां से यह पश्चिमी दिशा में एम० ई० एम० वाटर वर्क्स की बाड़ और वाड सं० 2 की सीमा के साथ-साथ झेलम नदी की धारा के मध्यभाग तक जाती है, तब यह दक्षिण की ओर झेलम नदी की धारा के मध्यभाग के साथ-साथ जाती है और आरंभिक बिन्दु अर्थात् सिविल क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 1 के पश्चिमी में झेलम नदी की धारा के मध्य भाग से मिलती है।

वाड सं० 2

यह सीमा एम० ई० एम० वाटर वर्क्स के पास स्थित सिविल क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 6 के पश्चिमी में झेलम नदी की धारा के मध्यभाग से प्रारंभ होती है। यह पूर्व की ओर एम० ई० एम० वाटर वर्क्स (समाविष्ट) की दक्षिणी बाड़ के साथ-साथ सिविल क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 6 से होती हुई राष्ट्रीय राजमार्ग तक जाती है तब यह उत्तर की ओर मुड़ जाती है और राष्ट्रीय राजमार्ग (अपवर्जित) के साथ-साथ रणवीर सिंह एवेन्यू से इसके मिलने के स्थान तक जाती है और तब यह पूर्व की ओर मुड़ जाती है और रणवीर सिंह एवेन्यू (अपवर्जित) के साथ-साथ रणवीर सिंह एवेन्यू से इसके मिलने के स्थान तक जाती है और तब यह पूर्व की ओर मुड़ जाती है और रणवीर सिंह एवेन्यू (अपवर्जित) के साथ-साथ उस बिन्दु तक जाती है जहां यह सैनिक डेरी फार्म की पूर्वी सीमा से मिलती है। तब यह उत्तर की ओर सैनिक डेरी फार्म के पीछे उसके उत्तर-पूर्वी कोन तक जाती है। तब यह पश्चिम की ओर राम मैमोरियल पार्क के पीछे से उसके दक्षिण-पूर्वी कोने तक जाती है, तब यह उत्तर की ओर मुड़ जाती है और दास मैमोरियल पार्क, बाल उच्च विद्यालय और चीनानी हाऊस की पूर्वी सीमा के साथ-साथ ताले से इसके मिलने के स्थान तक जाती है। वहां से यह इंदिरा कालोनी के पीछे ताले (मर्रेशन सं० 56) के साथ-साथ जर्मा निवास के सामने के बिन्दु तक जाती है। तब यह उत्तर-पूर्व की ओर मोनवार ताले से इसके मिलने के स्थान पर स्थित सिविल क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 22 तक जाती है। तब यह पश्चिम की ओर मोनवार

नाने के साथ-साथ श्री चोपड़ा के प्लाट (सर्वेक्षण सं० 49) के उत्तरी कोने तक जाती है। तब दक्षिण-पश्चिम की ओर छावनी बोर्ड वाचनालय की पूर्वी सीमा के साथ-साथ राष्ट्रीय राजमार्ग से इसके मिलने के स्थान तक जाती है। तब यह उत्तर-पश्चिम की ओर राष्ट्रीय राजमार्ग के साथ-साथ छावनी बोर्ड सीमा स्तंभ सं० 21 तक जाती है। तब यह दक्षिण-पश्चिम छावनी सीमा के साथ-साथ झेलम नदी के बाध पर स्थित स्तंभ सं० 22 तक जाती है। वहां से यह दक्षिण-पश्चिमी दिशा में झेलम नदी की धारा के मध्यभाग तक जाती है। तब यह झेलम नदी के प्रतिश्रोत के साथ-साथ षटर्जी के मकान के दक्षिणी कोने के सामने के बिन्दु तक जाती है। वहां से यह पूर्व की ओर षटर्जी के मकान की दक्षिणी सीमा तक जाती है और उम मकान की आड़ के साथ-साथ राष्ट्रीय राजमार्ग तक जाती है। तब यह राष्ट्रीय राजमार्ग और षटर्जी के मकान को जाने वाले मार्ग के चौराहे से दक्षिण की ओर मुड़ जाती है और राष्ट्रीय राजमार्ग (समाविष्ट) के साथ-साथ शिवपुरा मार्ग के चौराहे तक जाती है। तब यह पश्चिम की ओर शिवपुरा मार्ग के साथ-साथ यतू मुहल्ला मार्ग से इसके मिलने के स्थान तक जाती है। तब यह दक्षिण की ओर यतू मुहल्ला मार्ग (समाविष्ट) के साथ-साथ श्री जे० बी० नंदा के मकान को जाने वाले मार्ग से इसके मिलने के स्थान तक जाती है। वहां से यह उसी दिशा में उस मार्ग (अपवर्जित) के साथ-साथ श्री जे० बी० नंदा के मकान के सामने झेलम नदी की धारा के मध्यभाग तक जाती है, तब यह पूर्व और दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ जाती है और झेलम नदी की धारा के मध्य भाग के साथ-साथ आरम्भिक बिन्दु अर्थात् सिविल क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 6 के पश्चिम तक जाती है।

बाईं सं० 3

यह सीमा श्री जे० बी० नंदा के मकान के दक्षिण में झेलम नदी की धारा के मध्यभाग से आरंभ होती है। यह उत्तर की ओर श्री जे० बी० नंदा के मकान (समाविष्ट) के मार्ग के साथ-साथ यतू मुहल्ला मार्ग से इसके मिलने के स्थान तक जाती है। तब यह पूर्वी और उत्तरी दिशा में यतू मुहल्ला मार्ग के साथ-साथ शिवपुरा मार्ग से इसके मिलने के स्थान तक जाती है। तब यह पूर्व की ओर मुड़ जाती है और शिवपुरा मार्ग के साथ-साथ राष्ट्रीय राजमार्ग से इसके मिलने के स्थान तक जाती है। तब यह उत्तर की ओर राष्ट्रीय राजमार्ग के साथ-साथ षटर्जी के मकान को जाने वाले उपमार्ग तक जाती है, तब यह पश्चिम की ओर षटर्जी के मकान की दक्षिणी सीमा के साथ-साथ झेलम नदी की धारा के मध्यभाग तक जाती है। तब यह शिवपुरा के पश्चिम, दक्षिण और पूर्व की ओर आरम्भिक बिन्दु अर्थात् श्री जे० बी० नंदा के मकान के दक्षिण में झेलम नदी की धारा के मध्यभाग तक जाती है।

बाइ सं० 4

यह सीमा सोनवार पुल के किनारे पर स्थित छावनी सीमा स्तंभ सं० 21 और राष्ट्रीय राजमार्ग से सोनवार बाध के मिलने के स्थान से आरंभ होती है। यह उत्तर की ओर सोनवार बाध (अपवर्जित) के साथ-साथ और छावनी सीमा के साथ-साथ छावनी सीमा स्तंभ सं० 20क, 20ख, 20ग, 20घ, और 20ङ से होती हुई, वन नर्सरी के पास गोपकार मार्ग के किनारे पर स्थित स्तंभ सं० 10 तक जाती है। तब यह दक्षिण की ओर वन नर्सरी (अपवर्जित) की पश्चिमी सीमा के साथ-साथ अन्तर सोनवार मार्ग तक जाती है, तब यह पूर्व की ओर वन नर्सरी के दक्षिणी किनारे से पूर्व की ओर मुड़ जाती है और सोनवार मार्ग के साथ-साथ जियारात पाल पोड़ा (समाविष्ट) तक जाती है। वहां से यह दक्षिण की ओर सोनवार नाले को जाने वाले पथ के साथ-साथ श्री चोपड़ा के प्लाट

(सर्वेक्षण संख्या 49) के उत्तरी कोने तक जाती है, तब यह दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ जाती है और छावनी बोर्ड वाचनालय और बाईं सं० 2 की सीमा के साथ-साथ राष्ट्रीय राजमार्ग तक जाती है, तब यह उत्तर-पश्चिम की ओर मुड़ जाती है और राष्ट्रीय राजमार्ग के साथ-साथ जाती है और आरम्भिक बिन्दु अर्थात् छावनी सीमा स्तंभ सं० 21 से मिलती है।

बाईं सं० 5

यह सीमा जियारात पालपोड़ा (अपवर्जित) से आरंभ होती है। यह पूर्व की ओर सोनवार मार्ग के साथ-साथ जलाली विला (समाविष्ट) तक जाती है। वहां से जलाली विला के दक्षिणी किनारे से दक्षिण की ओर, जलाली विला को सोनवार नाले तक की सीमा के साथ-साथ उम नाले पर स्थित सिविल क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 23 तक जाती है। तब यह पश्चिम की ओर मुड़ जाती है और नाले के साथ-साथ श्री चोपड़ा के प्लाट (सर्वेक्षण सं० 49) के उत्तर कोने तक जाती है जहां यह बाईं सं० 4 की सीमा से मिलती है, और वहां से यह उत्तरी दिशा की ओर मुड़ जाती है और आरम्भिक बिन्दु अर्थात् जियारात पालपोड़ा से मिलती है।

बाईं सं० 6

यह सीमा बटवाड़ा गांव में सिविल क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 1 के पश्चिम में झेलम नदी की धारा के मध्य भाग से आरंभ होती है। यह दक्षिण, दक्षिण पूर्व और पूर्व की ओर धारा के मध्य भाग के साथ-साथ स्तंभ सं० 34 न के पास के बिन्दु तक जाती है, तब यह राष्ट्रीय राजमार्ग से इसके मिलने के स्थान पर स्थित स्तंभ सं० 34 झ के पूर्व में मुड़ जाती है। तब यह दक्षिण की ओर राष्ट्रीय राजमार्ग (अपवर्जित) के साथ-साथ सीमा स्तंभ सं० 34अ, 34ब, 34च, 34ड, 34ध और 34ग से होती हुई बटवाड़ा पहाड़ी के पाद पर स्थित सीमा स्तंभ सं० 34ख तक जाती है। तब यह पूर्व की ओर छावनी सीमा के साथ-साथ छावनी स्तंभ सं० 34क तक जाती है। तब यह पूर्व की ओर मुड़ जाती है और 1803.6 मीटर और 1857.00 मीटर की ऊंचाई पर स्थित बिन्दु से होती हुई 2307.8 मीटर की ऊंचाई पर स्थित बिन्दु तक जाती है, तब यह उत्तर की ओर मुड़ जाती है और पर्वत माला के साथ-साथ 2555.00 मीटर की ऊंचाई पर स्थित बिन्दु तक जाती है। तब यह उत्तर-पश्चिम की ओर मुड़ जाती है और 2301.6, 2152.00, 2034.8 और 1843.00 मीटर की ऊंचाई पर स्थित बिन्दुओं से होती हुई गोपकार मार्ग से इसके मिलने के स्थान पर स्थित सीमा स्तंभ सं० 1 तक जाती है। तब यह पश्चिम की ओर गोपकार मार्ग (अपवर्जित) के साथ-साथ सीमा स्तंभ सं० 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 और 9 से होती हुई सीमा स्तंभ सं० 10 तक जाती है जहां यह वन नर्सरी से मिलती है। तब यह दक्षिण की ओर वन नर्सरी (समाविष्ट) के साथ-साथ अन्तर-सोनवार मार्ग तक जाती है, तब यह पूर्व की ओर मुड़ जाती है और अन्तर-सोनवार और बाईं सं० 4 और 5 की सीमाओं के साथ-साथ जलाली विला तक आती है। तब यह दक्षिण की ओर जलाली विला की सीमा के साथ-साथ सोनवार नाले पर स्थित सिविल क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 23 के पूर्व में स्थित बिन्दु तक जाती है। तब यह पश्चिम की ओर सोनवार नाले के साथ-साथ सिविल क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 22 तक जाती है, तब यह दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण की ओर मुड़ जाती है और बाईं सं० 2 की सीमा के साथ-साथ रणवीर सिंह एवेन्यू तक जाती है, तब यह पश्चिम की ओर मुड़ जाती है और रणवीर सिंह एवेन्यू और बाईं सं० 2 की सीमा के साथ-साथ राष्ट्रीय राजमार्ग से इसके मिलने के स्थान तक जाती है, तब यह दक्षिण की ओर मुड़ जाती है और राष्ट्रीय राजमार्ग के साथ साथ एम ई एस वाटर वर्क्स के पूर्वी किनारे तक आती है, तब यह पश्चिमी की ओर मुड़ जाती है और एम०ई० एन० वाटर वर्क्स की बाड़ के साथ-साथ सिविल क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 8 के दक्षिण पश्चिम तक जाती है और तब यह दक्षिण की ओर मुड़ जाती है और एम०ई० एम० मार्ग के साथ-साथ सिविल क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 4 और 5 से होती हुई, सिविल

क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 3 तक जाती है, तब यह पश्चिम की ओर मिक्लिन क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 2 से होती हुई, मिक्लिन क्षेत्र सीमा स्तंभ सं० 1 तक जाती है और तब यह पश्चिम की ओर मुड़ जाती है और जेनम नदी की धारा के माध्य भाग प्रवाहित आरम्भिक बिन्दु से मिलती है।

[फाइन सं० 29/78/सी/एनएचसी/67/2720-सी/सी (क्यू एंड सी)]

S.R.O. 328.—Whereas draft of the Badamibagh Cantonment (Division into wards) Rules 1974 was published with the notification of the Government of India in the Ministry of Defence No. SRO 112 dated the 22nd March, 1974 in the Gazette of India, Part II, Section 4, dated 30th March, 1974 as required by section 31 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924), for inviting objections and suggestions from all the persons likely to be affected thereby within sixty days of the date of publication of the said notification;

And whereas the said Gazette was made available to the public on the 30th March, 1974;

And whereas no objections or suggestions were received from any person before the date so specified;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 31 of the said Act, the Central Government hereby makes the following rules, namely:—

RULES

1. Short title and commencement.—

- (1) These rules may be called the Badamibagh Cantonment (Division into Wards) Rules, 1974.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Division of cantonment into wards.—

For the purpose of holding elections to the Cantonment Board, Badamibagh, the said Cantonment shall be divided into six wards to be respectively called as:—

Ward No. I
Ward No. II
Ward No. III
Ward No. IV
Ward No. V
Ward No. VI

3. Boundaries of wards.—

The boundaries of each of the said wards shall be as specified in the Schedule annexed to these rules.

4. Number of member to be elected.

The number of members to be elected from each of the said wards shall be as follows:—

Ward No. I	— 1
Ward No. II	— 1
Ward No. III	— 1
Ward No. IV	— 1
Ward No. V	— 1
Ward No. VI	— 1

SCHEDULE

(Boundaries of Wards—See Rule 3)

WARD No. I

The boundary starts from mid stream river Jhelum West of Civil Area Boundary Pillar No. 1. It runs towards south-east along the Civil Area Boundary upto Pillar No. 3 at its junctions with MES Road through Civil Area Boundary pillars No. 1 and 2 along the house of Shri Jai Narain Dass and Shri C. A. Hitter (both included). Then it turns towards north-east along the MES/Cantonment Board Road (both excluded) upto Civil Area boundary pillar No. 6 located opposite MES Water Works through Civil Area boundary pillars Nos. 4 and 5. From there it runs in westerly direction to the mid stream river Jhelum along the fencing of MES Water Works and the boundary of Ward No. II, then runs south along the mid stream of river Jhelum and meets the starting point i.e. mid stream river Jhelum west of Civil Area boundary pillar No. I.

WARD NO. II

The boundary starts from mid stream river Jhelum west of Civil Area boundary pillar No. 6 situated near MES water Works. It runs towards east up to the National Highway through Civil Area Boundary Pillar No. 6 along the Southern fencing of MES Water Works (included). Then it turns towards north along the National Highway (excluded) upto its junction with Ranbir Singh Avenue and it then turns towards east along the Ranbir Singh Avenue (excluded) to the point where it meets eastern boundary of the Military Dairy Farm. Then it runs towards north behind Military Dairy Farm upto its north-east corner. Then it runs towards west little behind Dass Memorial Park upto its south-east corner, then turns towards north along the eastern boundary of Dass Memorial Park, Boys High School, and Chinani house at its junction with the Nallah. From there it runs along the Nallah (Survey No. 56) behind Indira Colony upto the point opposite Sharma Niwas. Then it runs north-east upto Civil Area Boundary pillar No. 22 at its junction with Sonawar Nallah. Then it runs towards west along Sonawar Nallah upto the northern corner of Shri Chopra's plot (Survey No. 49). Then it runs towards south-west along the eastern boundary of Cantonment Board Reading Room upto its junction with the National Highway. Then it runs towards north-west along the National Highway upto Cantonment boundary pillar No. 21, then it runs towards south-west along the Cantonment boundary upto pillar No. 22 located on the Bund of river Jhelum, from there it runs in south westerly direction upto the mid stream river Jhelum. Then it runs along the up-stream river Jhelum upto the point opposite southern corner of Chatterjee's House from where it runs towards east upto southern boundary of Chatterjee's House along the fencing of the house upto the National Highway. Then it turns south from the junction of National Highway and approach road to Chatterjee's House along the National Highway (included) upto Shivpora Road Junction. Then it runs towards west along Shivpora Road upto its junction with Yattoo Mohalla Road. Then it runs towards south along Yattoo Mohalla Road (included) upto its junction with the road leading to the house of Shri J. B. Nanda. From there it runs in the same direction along the road (excluded) upto mid stream river Jhelum opposite to Shri J. B. Nanda's house, then turns towards east and south-east along the mid stream river Jhelum upto the starting point i.e. west of Civil Area Boundary Pillar No. 6.

WARD NO. III

The boundary starts from mid stream river Jhelum opposite south of house of Shri J. B. Nanda. It runs towards north along the road of Shri J. B. Nanda's house (included) upto the junction with the Yattoo Mohalla Road. Then it runs in easterly and northerly direction along the Yattoo Mohalla Road upto its junction with Shivpora Road, then turns towards east along Shivpora Road upto its junction with the National Highway. Then it runs towards north along the National Highway upto the approach road to Chatterjee's House, then it runs towards west along the southern boundary of Chatterjee's house upto mid stream river Jhelum. Then it runs along the mid stream river Jhelum towards west-south and east around Shivpora to the starting point i.e. mid stream river Jhelum opposite south of house of Shri J. B. Nanda.

WARD NO. IV

The boundary starts from Cantonment Boundary Pillar No. 21 located at the edge of Sonawar Bridge and junction of Sonawar Bund with the National Highway. It runs towards north along Sonawar Bund (excluded) along the Cantonment Boundary upto Pillar No. 10 located on the edge of Gopkar Road near Forest Nursery, through Cantonment Boundary Pillars Nos. 20-A, 20-B, 20-C, 20-D and 20-E. Then it runs towards south along the western boundary of Forest Nursery (excluded) upto inner Sonawar Road. Then turns towards east from the southern edge of Forest Nursery along the Sonawar Road to Ziarat Palpora (included). From there it runs towards south along the path to Sonawar Nallah upto northern corner of Shri Chopra's plot (Survey No. 49), then turns towards south-west along the Cantonment Board Reading Room and the boundary of Ward No. II to National Highway, then turns towards north-west and runs along the National Highway and joins the starting point i.e. Cantonment boundary pillar No. 21.

WARD NO. V

The boundary starts from Ziarat Palpora (excluded). It runs towards east along Sonawar Road to Jalali Villa (included). From there it runs towards south, from southern edge of Jalali Villa along the boundary of Jalali Villa to Sonawar Nallah upto Civil Area Boundary Pillar No. 23 located on the Nallah. Then it turns towards west along the Nallah where it meets the boundary of Ward No. IV upto the Northern Corner of Shri Chopra's plot (Survey No. 49) and from there it turns towards the Northerly direction, meeting the starting point i.e. Ziarat Palpora.

WARD NO. VI

The boundary starts from mid stream river Jhelum west of Civil Area Boundary Pillar No. 1 in Batwara village. It runs towards south, south-east and east along the mid stream to the point near boundary pillar No. 34-J, then turns east to pillar No. 34-I at its junction with National Highway. Then it runs towards south along the National Highway (excluded) upto Boundary Pillar No. 34-B situated at the foot of Batwara Hills through boundary pillars Nos. 34-H, 34-G, 34-F, 34-E, 34-D and 34-C. Then it runs towards East along the Cantonment Boundary upto Boundary Pillar No. 34-A. Then turns towards west upto a point at a height of 2307.8 meters running through point at a height of 1808.6 meters and 1857.00 meters, then turns towards north along the ridge to a point at a height of 2555.00 meters. Then it runs towards north-west to Boundary Pillar No. 1 at its junction with Gopkar Road running through points at height 2301.6, 2152.00, 2034.8 and 1843.00 meters. Then it runs towards west along Gopkar Road (excluded) to Boundary Pillar No. 10, running through Boundary Pillars Nos. 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 and 9 where it meets the Forest Nursery. Then it runs towards south along the Forest Nursery (included) upto inner Sonawar Road, then turns towards east along inner Sonawar and the boundaries of Ward No. IV and V upto Jalali Villa. Then it runs towards south along the boundary of Jalali Villa upto the point east of Civil Area Boundary Pillar No. 23 on Sonawar Nallah. Then it runs west along Sonawar Nallah to Civil Area Boundary Pillar No. 22. then turns south west and south along the Boundary of Ward No. II to Ranbir Singh Avenue. Then turns west along the Ranbir Singh Avenue and boundary of Ward No. II to its junction with National Highway. Then turns south along the National Highway upto the eastern edge of Military Engineering Service Water Works, then turns west along the fencing of Military Engineering Service Water Works to south-west of Civil Area Boundary Pillar No. 6 and then turns south along Military Engineering Service Road to Civil Area Boundary Pillar No. 3 through Civil Area Boundary Pillars Nos. 4 and 5, then it runs west to Civil Area Boundary Pillar No. 1 through Civil Area Boundary Pillar No. 2 and then turns west meets the mid stream river Jhelum, the starting point.

[File No. 29/78/C/L&C/67/2720-C/D (Q&C)]

नई दिल्ली, 23 सितम्बर, 1974

क्रा०नि०प्रा० 329.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा अधिसूचित करती है कि छावनी बोर्ड, पूना की सदस्यता में मेजर जे० बी० सूर्यवंशी के त्यागपत्र को केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के कारण एक रिक्ति हो गई है।

[फाइल सं० 19/11/सी/एल एंड सी/65/2731-सी/डी (क्यू एंड सी)]

New Delhi, the 23rd September, 1974

S.R.O. 329.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that a vacancy has occurred in the membership of the Cantonment Board, Poona by reason of the acceptance by the Central Government of the resignation of Major J. B. Suryawanshi.

[File No. 19/11/C/L&C/2731-C/D (Q&C)]

क्रा०नि०प्रा० 330.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा अधिसूचित करती है कि मेजर एस० एस० बालिया को मेजर जे० बी०

सूर्यवंशी के, जिन्होंने त्यागपत्र दे दिया है, स्थान पर छावनी बोर्ड पूना के एक सदस्य के रूप में नाम निर्दिष्ट किया गया है।

[फाइल सं० 19/11/सी/एल एंड सी/65/2731-सी/डी (क्यू एंड सी)]

S.R.O. 330.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that Major S. S. Walia has been nominated as a member of the Cantonment Board Poona vice Major J. B. Suryawanshi who has resigned.

[File No. 19/11/C/L&C/65/2731-C/1/D (Q&C)]

क्रा०नि०प्रा० 331.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा अधिसूचित करती है कि छावनी बोर्ड पूना की सदस्यता में ले० कर्नल वाई० पी० मुले के त्यागपत्र को केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के कारण एक रिक्ति हो गई है।

[फाइल सं० 19/11/सी/एल एंड सी/65/2731-सी/2/डी (क्यू एंड सी)]

S.R.O. 331.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that a vacancy has occurred in the membership of the Cantonment Board, Poona by reason of the acceptance by the Central Government of the resignation of Lt. Col. Y. P. Mulay.

[File No. 19/11/C/L&C/65/2731-C/2/D (Q&C)]

क्रा०नि०प्रा० 332.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) के अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा अधिसूचित करती है कि ले० कर्नल राज कुमार सिंह को ले० कर्नल वाई० पी० मुले के, जिन्होंने त्यागपत्र दे दिया है, स्थान पर छावनी बोर्ड पूना के एक सदस्य के रूप में नाम निर्दिष्ट किया गया है।

[फाइल सं० 19/11/सी/एल एंड सी/65/2731-सी/3/डी (क्यू एंड सी)]

S.R.O. 332.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that Lt. Col. Rajkumar Singh has been nominated as a member of the Cantonment Board Poona vice Lt. Col. Y. P. Mulay who has resigned.

[File No. 19/11/C/L&C/65/2731-C/3/D (Q&C)]

नई दिल्ली, 25 सितम्बर, 1974

क्रा०नि०प्रा० 333.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा अधिसूचित करती है कि छावनी बोर्ड, बादामी बाग की सदस्यता में मेजर एस० पी० रिगजीन के त्यागपत्र को केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकार कर लिए जाने के कारण एक रिक्ति हो गई है।

[फाइल सं० 19/22/सी/एल एंड सी/65/2784-सी/डी (क्यू एंड सी)]

New Delhi, the 25th September, 1974

S.R.O. 333.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that a vacancy has occurred in the membership of the Cantonment Board, Badami-bagh by reason of the acceptance by the Central Government of the resignation of Maj. S. P. Rigzin.

[File No. 19/22/C/L&C/65/2784-C/D (Q&C)]

क्रा०नि०प्रा० 334.—छावनी अधिनियम, 1924 (1924 का 2) की धारा 13 की उपधारा (7) का अनुसरण करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा अधिसूचित करती है कि मेजर ए० एच० खान को मेजर एस० पी० रिगजीन के, जिन्होंने त्यागपत्र दे दिया है, स्थान पर छावनी बोर्ड बादामी-बाग के एक सदस्य के रूप में नाम निर्दिष्ट किया गया है।

[फाइल सं० 19/22/सी/एल एंड सी/65/2784-सी/1/डी (क्यू एंड सी)]

जन० सी० स्वामीनाथन, अवर सचिव

S.R.O. 334.—In pursuance of sub-section (7) of section 13 of the Cantonments Act, 1924 (2 of 1924), the Central Government hereby notifies that Maj. A. H. Khan has been nominated as a member of the Cantonment Board Badami-bagh vice Maj. S. P. Rigzin who has resigned.

[File No. 19/22/C/L&C/65/2784-C/1/D (Q&C)]

N. V. SWAMINATHAN, Under Secy.